साहित्यिक और सामाजिक मूल्यों की मासिक पत्रिका

R.N.I. No. : RAJHIN/2018/75539

www.mahisandesh.com

ISSN: 2581-9208

माही संदेश

दस्तक दिल तक

वर्ष : 3 | अंक : 1, 2, 3 | अप्रैल - मई - जून, 2020 | पृष्ठ संख्या : 32 | मूल्य : ₹ 35/-

लॉकडाउन संयुक्तांक

कोरोना योद्धाओं को समर्पित

बाहर दुनिया का अभी,
बहुत बुरा है हाल।
घर से बाहर मत अभी,
बेटे पंख निकाल।।

आशुकवि राजेश राज

मेरी जिंदगी की मैनेजमेंट गुरु है माला

सुधीर माथुर
संरक्षक-सलाहकार
माही संदेश
mathursudhmat@yahoo.com

6 जून को मेरी छोटी बहिन माला का जन्मदिवस आता है, जो कि मेरी सबसे करीबी दोस्त भी है, उनके साथ बिताए हर पल यूं तो पल-पल मेरे साथ रहते हैं, 6 जून की सुबह जब तस्वीर पर फूल चढ़ाकर माला को जन्मदिवस की शुभकामनाएं दे रहा था तो ज़िंदगी के लम्हे फिर से आंखों के सामने जीवंत हो रहे थे। हम पांच भाई-बहिनों में सबसे छोटी थी माला लेकिन जिंदगी में वो हम सबसे बड़ी थी, उसकी हर बात हमारे लिए पत्थर की लकीर होती थी, **उसका समझाना ऐसा था कि हर बड़ी से बड़ी मुश्किल का हल चुटकियों में निकाल लेती थी, ज़िंदगी को यूँ तो जी रहा था लेकिन जिंदादिली से जीना माला ने सिखाया, अपने हर जन्मदिन पर वो आमेर शिला माता मंदिर और दिल्ली रोड़ कूकस स्थित साईं बाबा मंदिर जाती थी, उसके जाने के बाद मैं हर बार उसके जन्मदिन पर जाता हूं लेकिन इस समय कोरोना संकट के कारण मंदिर बंद हैं तो पहली बार जाना नहीं हो पाया घर पर ही उसके लिए हमेशा की तरह भगवान से प्रार्थना की।**

अपनी छोटी सी जिंदगी में माला बहुत काम कर गई, उसने जेट एयरवेज में रीजनल सेल्स मैनेजर (राजस्थान) के रूप में अच्छा काम किया, आज जब **उसके जन्मदिन पर जेट एयरवेज में काम करने वाली सपना का फोन आया और उन्होंने कहा कि हम माला मैम को बहुत याद कर रहे हैं, उन्हीं में वो हिम्मत थी जो हमारे हितों के लिए हमेशा तैयार रहती थीं, जेट एयरवेज के सीएमड़ी नरेश गोयल भी उनकी बात को हमेशा सुनते थे, सपना फोन पर भावुक होते हुए बोली अगर आज माला मैम होती तो वो जेट एयरवेज की तरक्की को बहुत बढ़ा देतीं, खुद जेट एयरवेज के सीएमडी नरेश गोयल जी ने कहा था कि माला**

की जगह जेट एयरवेज में कोई नहीं ले सकता।

वर्ष 2005 में जब माला का कैंसर का इलाज मुंबई में चल रहा था तब भी उसने कभी महसूस नहीं होने दिया कि वह बीमार है, हम इलाज के लिए जाते तो वह इस तरह से व्यवहार करती थी जैसे हम शॉपिंग करने या घूमने जा रहे हैं, आज के 15 वर्ष पहले की बात याद करते हुए आंख भर आती है कि माला का मेरे प्रति इतना स्नेह था कि मुंबई में कैंसर के इलाज के दौरान उसका यह कहना कि तुम मुंबई में लंदन बर्बरी के शो रूम से टी शर्ट लेकर आओ, उस वक्त उस एक टी शर्ट कीमत 5000 रुपए थी, मुझे लगता था कि ये तो बहुत महंगा है लेकिन वो कहती कि तुम्हारा बर्थडे आ रहा है तुम्हें यह पहनना ही है, उसके द्वारा दी गई टीशर्ट टाइटन की घड़ी आज भी उसको मेरे पास मेरे साथ रखती हैं, माला और मेरा जन्मदिन जून में ही आता है।

उस वक्त जब भैंरो सिंह शेखावत जी उपराष्ट्रपति थे तब माला की तबीयत खराब रहती थी जब भी भैंरोसिंह शेखावत जी जयपुर आते चाहे दस मिनट के लिए घर आते लेकिन माला से मिले बिना नहीं जाते थे, ये उसकी अच्छाई ही थी जो इतने लोगों को स्नेह पूर्वक जोड़े रखती थी।

जो माला मन में ठान लेती थी उसे करके ही मानती थी, हमारी ज़िंदगी का वह मैनेजमेंट गुरु थी जो हमें मैनेजमेंट सिखाकर भगवान के पास चली गई, आज भी माला और मेरे मामा रघुसिन्हा जी का आशीर्वाद हमेशा मेरे साथ है, ये हर पल मेरे साथ रहते हैं, ज़िंदगी से शरीर भले ही दूर हो जाएं लेकिन मन की शक्ति मन का जुड़ाव हमेशा बना रहता है और यह जुड़ाव ही हमें जीना सिखाता है।

माला माथुर की स्मृति में किए गए कार्य

हमने रघु सिन्हा माला माथुर ट्रस्ट के जरिए एमजीड़ी स्कूल के सहयोग से माला की स्मृति में एक पुस्तकालय का निर्माण किया, इसके साथ-साथ आगरा रोड पर स्थित 52 फीट हनुमान जी की मूर्ति के पीछे श्री शंकर सेवा धाम संस्थान में मई 2019 में माला और मामा जी रघुसिन्हा जी की स्मृति में वृद्धाश्रम के लिए पांच कमरों का भी निर्माण कराया गया। वर्ष 1979 एमजीडी बैचमेट एक बुक पब्लिश कर रहे हैं जो कि माला के बैचमेट हैं,

उस आने वाली किताब को भी रघु सिन्हा माला माथुर ट्रस्ट के सहयोग से प्रकाशित किया जा रहा है। समय समय पर रघुसिन्हा माला माथुर ट्रस्ट के जरिए विभिन्न सामाजिक कार्य किए जाते हैं।

सुधीर माथुर

माही संदेश
(राष्ट्रीय पत्रिका)

संस्थापक	स्व. डॉ. मदन लाल शर्मा* स्व. पद्मनारायन*
संरक्षक-सलाहकार	सुधीर माथुर*
प्रधान संपादक	रोहित कृष्ण नंदन (9887409303)
प्रबंध निदेशक	डॉ. प्रेम प्रकाश शर्मा*
प्रबंध संपादक	योगिता 'ज़ीनत'*
सह-संपादक	नित्या शुक्ला* ममता पंडित* डॉ. महेश चंद*
आईटी सलाहकार	सोनू श्रीवास्तव*
संवाददाता	दीपक कृष्ण नंदन* ईशा चौधरी*
अकादमिक सलाहकार	डॉ. सुधीर सोनी*
बिजनेस हैड	अनुराग सोनी* राजपाल सिंह*
कानूनी सलाहकार	शिव कुमार अवार*
सर्कुलेशन मैनेजर	आर.के.शर्मा* (मुम्बई)

परामर्श समिति

माला रोहित कृष्ण नंदन*	डॉ. राजेन्द्र मोहन भटनागर*
डॉ. गीता कौशिक*	राजकुमार शर्मा*
डॉ. रश्मि शर्मा*	बालकृष्ण शर्मा*
डॉ. नीति मिश्रा*	डॉ. मीना शर्मा*
	प्रकाश चन्द शर्मा*

संरक्षक सदस्य	रामेश्वरी देवी*
डिजाइनिंग	Design n Print (www.designnprint.in)
मुद्रण	कांति ऑफसेट प्रिन्टर्स 9024765603

पृष्ठ संख्या : 32 आवरण सहित
प्रकाशन तिथि : प्रत्येक माह की 01 तारीख़

: कार्यालय :
50-51 ए, कनक विहार कमला नेहरु नगर के पास,
अजमेर रोड, हीरापुरा जयपुर-302021 (राजस्थान)।

ई-मेल :
editormahisandesh@gmail.com
मोबाइल : 9887409303

पत्रिका में प्रकाशित आलेख-रचनाएं, साक्षात्कार लेखकों के निजी विचार हैं। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र जयपुर होगा। चित्र व लेख के कुछ आंकड़ों को इंटरनेट वेबसाइटों से संकलित किया गया है।
नाम के आगे अंकित (*) चिह्न अवैतनिक है।

ज़िंदगी के लिए बढ़ाएं मदद का हाथ

रोहित कृष्ण नंदन
प्रधान संपादक
माही संदेश
mahisandesheditor@yahoo.com

हम सभी इस समय संकट के समय से गुजर रहे हैं। कोरोना संकटकाल ने समाज के हर वर्ग को प्रभावित किया है। हमारी प्रिंटिंग प्रेस कोरोना प्रतिबंधित क्षेत्र में होने के कारण हम अप्रैल-मई-जून अंक प्रकाशित नहीं कर पाए लेकिन अब हम अप्रैल-मई-जून अंक संयुक्तांक के रूप में प्रकाशित कर जून माह में अपने पाठकों को प्रेषित कर रहे हैं। इस असुविधा के लिए खेद है। आशा है आप हमेशा की तरह माही संदेश परिवार पर अपना स्नेह बनाए रखेंगे। यह संयुक्तांक उन कोरोना योद्धाओं को समर्पित है जिन्होंने विभिन्न भूमिकाओं में अपने फर्ज को निभाकर कोरोना सकटंकाल में अपनी अहम भूमिका निभाई है, विशेषकर चिकित्सा विभाग के चिकित्सक, नर्सिंग स्टाफ, पुलिस विभाग, शिक्षक, सफाई कर्मचारी एवं प्रशासनिक अधिकारी आदि। माही संदेश इन कोरोना योद्धाओं को दिल से सलाम करता है। इस कोरोना संकट ने हमको समझाया है कि अगर अभी भी हम नहीं संभले तो आने वाले समय में संकट बहुत विकट होगा। इस दौरान प्रकृति ने खुद को फिर से संवारा है, आइये हम प्रण लें कि अब हम प्रकृति को प्रदूषित नहीं करेंगे। पर्यावरण को स्वच्छ रखेंगे और हां यदि हम समर्थ हैं और किसी गरीब बच्चे की शिक्षा या किसी गरीब परिवार को भोजन भी देने का प्रण लें क्योंकि कहते हैं न कि बूंद बूंद से घड़ा भरता है, इस समय बेरोजगारी का संकट और विकट हो सकता है, इसलिए जितना हो सके हम दूसरों की सहायता करने का प्रयास करें। यह कोरोना संकट अभी भी जारी है इसलिए सावधानी बरतें, मास्क पहनें और बार-बार हाथों को धोएं और बहुत जरूरी होने पर ही बाहर निकलें क्योंकि अगर हम स्वस्थ रहेंगे तभी हमारा परिवार, हमारा समाज और हमारा देश स्वस्थ व खुशहाल रहेगा। उम्मीद है हम बहुत जल्द इस संकट से उबरेंगे और फिर से साथ-साथ मुस्कराएंगे। बस हमें अभी बिना मिले इस कोरोना संकट से साथ लडना है। शायर हैरत गौंडवी जी का एक शेर है कि 'गरीबी अमीरी है किस्मत का सौदा मिलो आदमी की तरह आदमी से'

शेष फिर...

एक नज़र यहां भी

मन की बात		
लॉक डाउन में फिर जिन्दगी मिली	मीना परमार	5
इन नाजुक बच्चों को अन्धकार में मत डालिये	अदिति चौधरी	5
मंथन		
एक मंथन : कोविड-19 के पश्चात् शिक्षा एवं कौशल क्षेत्र में सभांवित परिवर्तन	कर्नल डॉ. बलदेव सिंह चौधरी	6
अस्तित्व		
कोविड-19, आर्थिक विकास एवं पर्यावरण	विवेक मिश्र	9
भविष्य		
कोराना संकट : आपदा में अवसर	डॉ. सुरेन्द्र भास्कर	10
आधी आबादी		
इतिहास में महामारी याद रखी जायेगी तो सेवा भी जब मोर्चा शासन ने नहीं घरी की महिलाओं ने संभाला !	रेखा भाटिया	12
हमारा कानून		
महामारी अधिनियम, 1897	डॉ. मुकेश अग्रवाल	15
सलाम		
कर्तव्य है सबसे पहले : अभिषेक यादव	रोहित कृष्ण नंदन	16
किताबों की दुनिया		
नीरज गोस्वामी की कलम से	नीरज गोस्वामी	18
जय हिंद		
कोरोना योद्धा के रूप में जारी है जिम्मेदारी : गीता चौधरी	भरत कोराणा	19
समाज सेवा		20
गतिविधियां		21
काव्य कलम		22-25
जन संदेश		
कोरोना चुनौती है... कर्मनिष्ठ भारत आने वाली पीढ़ी का स्वाभिमान बने	डॉ. राजेन्द्र मोहन भटनागर	26
सिनेमा संदेश		
वो भूली दास्तां, लो फिर याद आ गयी...	शिशिर कृष्ण शर्मा	28
नमन		
अपनी लाख की कलाकृतियों से हमेशा जीवित रहेंगे हाजी इकराम अहमद खान	रोहित कृष्ण नंदन	30

आवरण चित्र
राजेश कुमार सोनी*

भारतीय जीवन बीमा निगम, जयपुर में प्रशासनिक अधिकारी के रूप में कार्यरत हैं व पिछले पांच वर्ष से फोटोग्राफी कर रहे हैं। इनके द्वारा ली गई तस्वीरें जीवन के विभिन्न रूपों को जीवंत करती हैं।

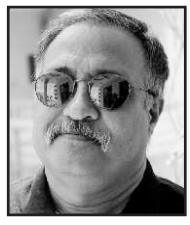

माही संदेश
हिन्दी पत्रिका के सदस्य बनें

: कार्यालय :
माही संदेश , 50-51ए, कनक विहार
कमला नेहरू नगर के पास, अजमेर रोड,
हीरापुरा, जयपुर (राजस्थान)।

सदस्यता शुल्क :

दो वर्ष : ₹ 800
पंचवर्षीय : ₹ 2,000
आजीवन : ₹ 11,000

चेक MAHI SANDESH (माही संदेश) के नाम से देय एवं रेखांकित होना चाहिए। रजिस्टर्ड डाक से प्रति मंगवाने पर प्रति वर्ष 300/- अतिरिक्त देय डाक खर्च शुल्क भेजें।

भवदीय
'रोहित कृष्ण नंदन'

संपादक : माही संदेश
खाता संख्या : 37802854186
IFSC : SBIN0032385
भारतीय स्टेट बैंक
शाखा : कनक विहार, हीरापुरा,
अजमेर रोड़, जयपुर
Paytm 9887409303

लिखते हैं तो स्वागत है...

अगर आप कविता, लघु कथा या सामाजिक विषयों पर लिखते हैं तो आप अपनी लेखन सामग्री हमें अपनी तस्वीर व पते के साथ ईमेल या डाक के माध्यम से भेज सकते हैं। चुनी हुई रचनाओं को माही संदेश के आगामी अंकों में प्रकाशित किया जाएगा।

डाक का पता - संपादक, माही संदेश
50-51 ए, कनक विहार, एसबीआई बैंक के पास, हीरापुरा, अजमेर रोड़, जयपुर पिन-302021 राजस्थान

ईमेल-
editormahisandesh@gmail.com
Mob. & whatsapp 9887409303

लॉक डाउन में फिर ज़िंदगी मिली...

मीना परमार
जयपुर (राजस्थान)
editormahisandesh@gmail.com

समय अच्छा हो या ख़राब कुछ ना कुछ सिखा कर ही जाता है इस कोरोना वायरस महामारी के बुरे अनुभव ने हम इंसानों को बहुत कुछ अच्छा सिखाया है, हमें याद दिलाया है कि कुछ आदतें हमेशा से बुरी थीं, लेकिन हमने ही उन्हें हल्के में लेना शुरू कर दिया था। इसलिए जरूरी है कि अच्छी आदतों को भी हम सब इस महामारी के बाद भी न छोड़ें।

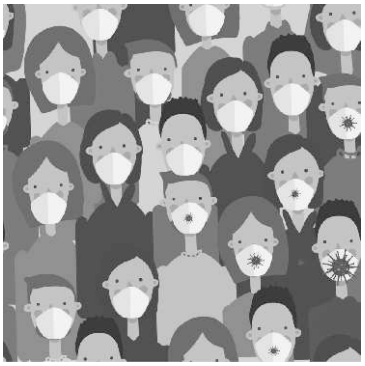

लॉक डाउन में बच्चों के साथ हमें भी अपना बचपन फिर से जीने का मौका दिया है। भाग दौड़ भरी प्रोफेशनल लाइफ के चलते पर्सनल लाइफ के लिए कम वक्त मिल पाता था।
लॉक डाउन में एक दूसरे के लिए क्वालिटी टाइम के साथ बच्चों के लिए भी भरपूर वक्त मिला। पहले कभी कभी सुबह समय मिल पाता था बच्चों का टिफिन दूध नाश्ता और और भी काफी घरेलू काम के चलते समय नहीं मिल पाता था। लेकिन लॉक डाउन मैं स्कूल और ऑफिस की छुट्टी के कारण समय निकालकर रोज का घूमना, कसरत करना, योग भी शामिल कर दिया, बच्चों की ऑनलाइन क्लास भी ज्वाइन की इससे मेरी स्कूलिंग की यादें भी ताजा हो गई, मैंने और बेटी ने मिलकर रोज नई नई डिसेज भी सीखीं और ट्राई भी कीं, जो इम्यूनिटी को मजबूत करें। बेटे और पति ने भी हर काम में सपोर्ट किया। बच्चों के साथ मिलकर खेल कूद और शरारत का हिस्सा भी बनकर पिछले दो महीनों से बेहद मजे किए। पैदल यात्रियों के लिए खाना बनाकर भी बांटा, और गरीबों की मदद भी की। वैसे हम हाउसवाइफ का तो हर दिन, हर रोज ही लॉक डाउन होता है, लेकिन अब की बार तो सब ने ही इसको जीया है और इसको महसूस किया है।

सरकार से अपील....

इन नाजुक बच्चों को अंधकार में मत डालिए...

अदिति चौधरी
जयपुर (राजस्थान)
editormahisandesh@gmail.com

माही संदेश : अब जो चलन निकला है स्कूल और बाकी शिक्षण संस्थाओं का, ऑनलाइन पढायेंगें, ये और भी घातक है। मेरा मानना है कि जब एक छोटा सा वायरस पूरी दुनिया बंद करा सकता है, सबका लॉकडाउन करा सकता है, व्यापार रोक सकता है, संसद के सत्र भी रुक सकते हैं, करोड़ो लोगों की आमदनी रुक सकती है, यहाँ तक की भारतीय रेल जो आजादी के बाद कभी नहीं रुकी उसको भी रोक सकता है तो क्या थोड़ा सेलेबस कम नहीं करा सकता? क्या एक साल कम नहीं पढ़ सकते? क्या अकबर - बाबर और बाकी इतिहास को कम नहीं जान सकते ? थोड़ा गुणा- भाग कम करने से जीवन की गणित में फेल नहीं हो जाएंगे, क्या थोड़ा जीव -जन्तुओं की जानकारी कम मिलने से उनके दया भाव में कोई फर्क आ जायेगा? शायद नहीं। इस बार 2-4 चैप्टर कम कर देंगे तो वो असफल नहीं होंगे, फिर क्यों हम स्कूल और बाकी शिक्षण संस्थाओं को ये नहीं बोल पा रहे हैं कि यह ऑनलाइन विपणन बन्द कर दीजिए। इस बार की परीक्षा में 4-5 प्रश्न कम पूछ लीजिये शायद कोई फर्क नहीं पड़ेगा। लेकिन अगर यह ऑनलाइन खेल इसी तरह चलता रहा तो जल्दी आपके और हमारे भविष्य की आंखों को अंधकारमय बना देगा। अभी तो शुरूआत है, आगे भी इन बच्चों को अपनी शिक्षा पूरी करके इन्हीं स्क्रीन से सामना करना है, व्यापार करना है, सरकारी और निजी सेवायें देनी हैं। हो सकता है तब तक इनकी आंखें साथ ना दे पायें और हम सब के सामने एक नई चुनौती आ जाये। इन नाजुक बच्चों को अंधकार में मत डालिए... , देश की सरकार और राज्य सरकारें ध्यान दीजिए...

एक मंथनः कोविड-19 के पश्चात शिक्षा एवं कौशल क्षेत्र में संभावित परिवर्तन

कर्नल (डॉ) बलदेव सिंह चौधरी
सैन्य अधिकारी
बिहार और झारखण्ड
एनसीसी निदेशालय
editormahisandesh@gmail.com

वायरस, महामारी और वैश्विक महामारियाँ दुनिया के लिए नये नहीं हैं। यह चीन में 3000 वर्ष ईसा पूर्व में सिरका महामारी, 430 ईसा पूर्व में एथेंस प्लेग से लेकर 20वीं शताब्दी के स्पेनिश फ्लू (1918-20) और सबसे हाल ही में सार्स (2002), स्वाइन फ्लू (2009-10), इबोला(2009-10) और अब नोबल कोरोना वायरस महामारी लगातार होती आयी है। कोविड-19 के बारे में जो बात अनोखी है, वह है इसका तेजी से फैलाव, विश्वव्यापी उपस्थिति और घातकता जिसकी वजह से इसने पूरी दुनिया को सकते में डाल रखा है। दूरसंचार, टेलीमेट्री और संचार क्षेत्र के संसाधनों में उन्नत तकनीक ने इस स्थानीय अनदेखे सूक्ष्म वायरस को लगभग पूरी पृथ्वी पर हावी बनना संभव बना दिया है। अत्यधिक उन्नत तकनीक ने समय और दूरी के अवरोध को कम कर दिया है और साइबर स्पेस में अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं को हटा दिया है, जिसने सभी देशों को एकीकृत किया और पूरी दुनिया को एक वैश्विक गाँव में बदल दिया। मानव जाति ने इस टेक्नालॉजी से अपनी अपार समस्याओं का हल ढूंढ़ कर अपना जीवन जीना आसान बना रही है। हम अपने संसाधनों को साझा कर रहे हैं, विचारों का आदान-प्रदान कर रहे हैं, पूरी मानवता के हित में ज्ञान फैला रहे हैं और उन्नत जीवन जीने का लाभ उठा रहे हैं। छह महीने पहले भी हमारे लिए इस तरह की अद्भुत तकनीक का संदेह होना लाजिमी नहीं था, जब तक कि वुहान में पैदा हुए इस सूक्ष्म वायरस ने दुनिया को कड़ी चुनौती नहीं दी और हमारे दैनिक जीवन को पंगु न बना दिया। यह सोचने पर मजबूर करता है कि क्या तकनीक वरदान है या मानवता के लिए अभिशाप ? लेकिन,यह भी एक सच्चाई है कि हम पाषाण युग में वापस नहीं जा सकते। एक बार हुई उन्नति अपरिवर्तनीय है। हमें समस्या क्षेत्रों में और भी उन्नत तकनीक को लागू करके समाधान खोजने की जरूरत है। फिलहाल समय की जरूरत है कि हम अपना ध्यान तुरंत समस्या से समाधान की तरफ स्थानांतरित करें। काली घटाओं में भी रोशनी की परतें होती हैं, और सभी चुनौतियाँ अपने साथ में अवसरों को लेकर आती है। वर्ष 2008 की आर्थिक मंदी और वित्तीय संकट ने व्हाट्सएप, फेसबुक, ट्विटर और इंस्टाग्राम को जन्म दिया, जिसने नये रास्ते बनाये और जिस तरह से दुनिया के काम करने के तरीके को बदल दिया वो हमारे सामने है। भारत अब फेसबुक और व्हाट्सएप देश के रूप में जाना जाता है। यह सच है कि आवश्यकता आविष्कार की जननी है। नवंबर 2016 में भारत में डिमॉनेटाइजेशन के समय बडे. पैमाने पर डिजिटाइजेशन में तेजी आयी, यहाँ तक कि सड.क के किनारे चाय बेचने वाले को भी पेटीएम पर 10 रुपये स्वीकार करने के लिए मजबूर होना पड़ा। इस साल मार्च में लॉकडाउन होने के बाद से दुनिया और भी तेजी से बदल रही है। महिंद्रा सैनिटाइजर बना रहा है, मारूति वेंटीलेटर बना रहा है, स्वीत्री किराने का सामान दे रहा है, लुईस वॉयटन मास्क बना रहा है और डॉक्टर ऑनलाइन सलाह दे रहे हैं।

मुझे नहीं पता है कि भविष्य में उद्योग और व्यापार जगत कैसे आकार लेंगे और वास्तव में कैसे काम करेंगे, लेकिन शिक्षा क्षेत्र के साथ मेरे जुड़ाव के कारण, इस क्षेत्र के लिए नई वास्तविकता क्या मायने रखती है, जरूर जानता हूं। हालांकि, यह कहना समय से पहले है, लेकिन नवीनतम रुझानों और मौजूदा परिस्थितियों से संकेत मिलता है कि भारतीय छात्र अध्ययन करने के लिए विदेश कम संख्या में जाएंगे, प्रौधोगिकी कंपनियाँ शिक्षक बन जाएंगी और शिक्षण संस्थानों को नवीनतम टेक्नालॉजी का सहारा लेना पडेगा। साथ ही शिक्षा अधिक सुलभ और सस्ती हो जायेगी, माता-पिता अपने बच्चों को ऑनलाइन सीखने के लिए प्रोत्साहित करेंगे। मानव संसाधन और विकास मंत्रालय (MHRD), यूनिवर्सिटी ग्रांट कमीशन (UGC), नेशनल कार्उसिल ऑफ एजुक्रेशन रिसर्च एंड ट्रेनिंग (NCERT),केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (CBSE), यहां तक कि स्टेट बोर्ड्स, नेशनल कार्उसिल ऑफ टीचर एजुकेशन (NCTE),अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (AICTE) की वेबसाइटों पर नजर डालें तो सभी को स्पष्ट हो जायेगा कि हम कितनी तेजी से नई वास्तविकताओं से जुड. रहे हैं। ऐप आधारित शिक्षण ,सरलीकरण और शिक्षण सामग्री की ऑनलाइन डिलीवरी लॉकडाउन में अचानक आवश्यकता बन गयी है, जबकि हमारे पास तकनीकी ज्ञान की कमी है और उसी के लिए बुनियादी ढॉचे की भी कमी है। हमारे महान शिक्षकों को सलाम, सभी बाधाओं के बावजूद उन्होंने शिक्षा क्षेत्र को लॉकडाउन नहीं होने

दिया। जब छात्र शारीरिक रूप से स्कूलों में शामिल नहीं हो पाये, तो शिक्षकों ने वर्चुअल स्कूलों को बालकों के ड्रांइग रूम में स्थापित कर दिया। हालांकि इसमें शिक्षण सामग्री के निर्माण और वितरण में घोर बदलाव के साथ अत्यंत तालमेल एवं प्रयासों की जरूरत पड़ी, पर हमारे शिक्षक कभी पीछे नहीं हटे। लेकिन यह भी एक सच्चाई है कि केवल मामूली शहरों में स्थित पब्लिक स्कूलें ही अपने फ्रंटलाइन समर्पित शिक्षकों के बल पर कर पायी। अगर गर्मियों के ब्रेक के बाद भी लॉकडाउन जारी रहता है तो अधिकांश स्कूलों का क्या होगा ? भले ही स्कूल फिर से खुल जायें, लेकिन कुछ स्कूलें बडे. पैमाने पर संक्रमण की रिपोर्ट करते हैं तो ? क्या माता-पिता अपने बच्चों को ऐसी भयावह स्थितियों में स्कूल जानें देंगे ? ऐसी शिक्षा के लिए गैर-कूशल शिक्षकों के प्रशिक्षण के बारे में क्या ? ग्रामीण सरकारी स्कूलों में अधिकांश छात्र जो कम्प्यूटर तो छोड, एंड्राइड फोन तक भी नहीं खरीद सकते, उनका क्या ? हम ग्रामीण और शहरी छात्रों के बीच डिजिटल विभाजन को कम करने की क्या योजना बना रहे हैं ? क्या ऐप, गेम और ऑनलाइन लर्निंग के इस्तेमाल से हमारे बच्चों का मशीनीकृत व्यवहार नहीं हो जायेगा ? लंबे समय में प्रौधोगिकी और शिक्षक के मानव स्पर्श के बीच संतुलन कैसे स्थापित करें ? छात्रों के आवागमन को सुविधाजनक बनाने के लिए बसों और लोकल ट्रेनों और महानगरों में भीड का प्रबंधन कैसे करें ? कैसे प्रोधोगिकी उन लोगों की मदद कर सकती है जो स्कूल नहीं पहुँच सकते हैं ? सोशल डिस्टेसिंग को ध्यान में रखते हुए, कर्मचारियों के सम्मेलन, अवकाश और अभिभावकों की बैठक का आयोजन कैसे करें ? इस वर्ष जुलाई/अगस्त में फिर से खुलने वाले स्कूलों और कॉलेजों के लिए इस महत्वपूर्ण चुनौती के समाधान के लिए कई और अधिक कठिन प्रश्नों और आकस्मिकताओं के बारे में हमारे सरकार, शिक्षाविदों और शिक्षा क्षेत्र के प्रबुद्धजनों के द्वारा तुरंत विचार और मंथन करने की आवश्यकता है।

समस्या से घबराने एवं सोच में पड.कर दुखी होने की जरूरत नहीं है। बड़ी चीजों को सरकार पर छोड़ा जा सकता है। हम निचले स्तर पर शिक्षक, अभिभावक, प्रशासक, शैक्षिक लीडर और नीति निर्धारक के रूप में पीछे नहीं हट सकते हैं, बल्कि खुद को मानसिक रूप से तैयार करके सरकार के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़े होने की आवश्यकता है। तेजी से बदलते शैक्षिक परिवेश के साथ खुद को जोड.कर सरकार के भारी प्रयासों का स्वागत करना होगा। सरकार और निजी क्षेत्र के प्रयासों का स्वागत करना होगा। हमारे लिए तुरंत सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि शिक्षकों, छात्रों और अभिभावकों को स्मार्ट उपकरणों के साथ ऑनलाइन सामग्री वितरण की नई प्रणाली के लिए तैयार करना, शिक्षकों, छात्रों और अभिभावकों के लिए ऑनलाइन प्रशिक्षण एवं काउंसलिंग सत्रों की व्यवस्था करके अचानक आये बदलाव के लिए तैयार करना होगा। शिक्षकों को अधिक से अधिक समायोजन करने की जरूरत है क्योंकि शिक्षा, शिक्षक केंद्रित से छात्र केंद्रित होती जा रही है। नई प्रणाली अधिक पारदर्शी होगी क्योंकि शिक्षक फ्रंट बेंचरों और बैक बेंचरों के बीच अंतर करने में सक्षम नहीं होंगे। कनाडा के लेखक जॉर्ज कोरोस ने एक बार ठीक ही कहा था, प्रोधोगिकी महान शिक्षकों की जगह नहीं लेगी लेकिन महान शिक्षकों के हाथों में प्रोधोगिकी परिवर्तनकारी हो सकती है। मुझे पूरा यकीन है कि हमारे शिक्षक इस समस्या से निपटने में सक्षम होंगे, बशर्ते हम अपने विशाल शिक्षक समुदाय की क्षमता युद्ध स्तर पर निर्मित करें क्योंकि यह तो उपकरणों से डिजिटल शिक्षण की शुरुआत है,यह निश्चित रूप से आगे ही बढेगी, चाहे कोरोना वायरस जल्दी ही गायब क्यों न हो जाये।

दूसरी सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि कॉलेज पास आउट में रोजगार के कौशल के विकास को सुनिश्चित करने के लिए हमारी उच्च शिक्षा पाठयक्रम को संरेखित करना है क्योंकि नौकरी का बाजार दिन प्रतिदिन बहुआयामी एवं अधिक प्रतिस्पर्धायुक्त होगा।

कार्य कौशल से डिग्री कम महत्वपूर्ण होगी। सॉफ्ट स्किल और आई.टी साक्षरता भविष्य के रोजगार के लिए आवश्यक होगी। हाल ही के एनएसीएच (NACH),सर्वे में पाया गया है कि 93 प्रतिशत नियोक्ता यह मानते है कि सॉफ्ट स्किल्स का होना जरूरी है। इस तरह के आवश्यक रोजगार कौशल को मौजूदा पाठयक्रम में समाहित करना ही होगा। नौकरी एवं व्यापार के लिए युवाओं को विकसित करने से पहले उद्योग घरानों के साथ संयुक्त समन्वय स्थापित करना आवश्यक है, जिससे उनकी मानव संसाधन आवश्यकताओं का आंकलन किया जा सके। कुछ व्यवसाय गायब हो रहे हैं और उनकी जगह नये व्यापार प्रतिस्थापित किये जा रहे हैं, जिन्हें आवश्यक तकनीक एवं कौशल की आवश्यकता होगी। इस आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) युग में बेहतर शिक्षण परिणामों के लिए प्रोद्योगिकी का उपयोग करने के लिए एआईसीटीई (AICTE) द्वारा राष्ट्रीय शैक्षिक गठबंधन प्रौधोगिकी (NEAT) योजना पहले ही शुरू की गयी है। लोग भीड., मॉल, बाजार, सिनेमा, रेस्तराँ से बचना चाहेंगे और घर से काम करना एक नया आदर्श होगा। मास्क पहनना और सामाजिक दूरी स्वेच्छा से रखी जायेगी। इन परिवर्तनों को देखते हुए, पुराने व्यवसायों और पुराने कौशल में से कुछ को अप्रचलित किया जायेगा और नये व्यवसाय एवं कौशल बहुत माँग में होंगे। इस लॉकडाउन के दौरान समाप्त की गयी कई नौकरियाँ वापस नहीं आनेवाली हैं। समय की माँग को भांपते हुए, सरकार ने विशेष आर्थिक पैकेज आत्मनिर्भर भारत लाँच किया है।

यह मुझे अमेरिकी भविष्यवादी एल्विन टॉफलर की याद दिलाता है जिन्होंने वर्ष 1970 में अपनी पुस्तक फ्यूचर शॉक में लिखा था कि भविष्य में बहुत कम समय में बहुत अधिक परिवर्तन हो सकते हैं जो तत्काल वास्तविकता बन गया है और हम अभी इसका सामना कर रहे हैं। वे आगे कहते हैं कि इक्कीसवीं सदी के निरक्षर वे नहीं होंगे जो पढ़ और लिख नहीं सकते हैं, लेकिन जो समय की जरूरत के मुताबिक पुराने कौशल को छोड.कर नया नहीं सीख सकते, वे निरक्षर होंगे। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) के आने से परिवर्तनों में और तेजी आयेगी। इसलिए, अप्रचलित कौशल को त्यागना और नयी आवश्यकता के लिए हमारे कार्यबल द्वारा नये कौशल सीखना प्रमुख

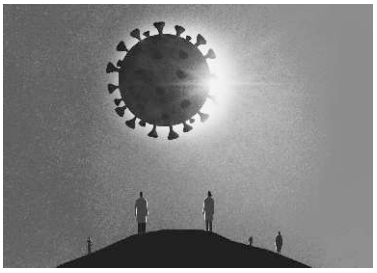

आवश्यकता है। हमें भारत निर्माण के लिए मानव संसाधन को ज्यादा से ज्यादा तैयार करने की आवश्यकता है। हमारी 65 प्रतिशत जनसंख्या 35 वर्ष से कम आयु के युवा हैं, इसलिए हमारे पास कोई दूसरा विकल्प नहीं है बल्कि इस बडी युवा आबादी का लाभ उठाने एवं राष्ट्रीय विकास के लिए उन्हें उद्यमी और इस परिवर्तित कारोबारी माहौल में नौकरी के लिए तैयार करना ही होगा। इस महत्वपूर्ण कार्य के लिए शिक्षा संस्थानों को आगे बढ.कर नेतृत्व करना होगा क्योंकि मानव संसाधन राष्ट्रीय विकास का प्रमुख घटक है। हम सशस्त्र बलों में दृढता से मानते हैं कि यह मशीन नहीं, बल्कि मशीन के पीछे आदमी है जो लड़ाई जीतता है। यह आत्मनिर्भर भारत परियोजना की लड़ाई जीतने के लिए समान रूप से लागू है। क्योंकि हमें आवश्यक कौशल से लैस लोगों की ऐसी योग्य सेना की आवश्यकता है। वैश्विक मॉडल और विश्व के माने हुए विश्वविद्यालयों में हमारे यहाँ वर्चुअल कैंपस बहुत कम समय में स्थापित कर दिये हैं। विकसित देश परिस्थितियों को जल्द ही भांप लेते हैं। हमें भी अपनी उपस्थिति विश्व स्तर पर महसूस कराने और इस क्षेत्र के वैश्विक नेतृत्व और प्रोद्योगिकी दिग्गजों से नये शिक्षण को सीखने की आवश्यकता है। शैक्षिक संस्थानों और प्रोद्योगिकी कंपनियों को मिशनरी उत्साह के साथ तेजी से एकीकृत करना है और इस क्षेत्र में असामान्य और अप्रत्याशित आयी क्रांति का समाधान खोजने के लिए सर्वोतम वैश्विक दिमागों से सीखने की जरूरत है। भविष्य में होने वाली नयी घटनाओं के बारे में जानकारी और सर्तकता के साथ तालमेल बनाये रखना अति आवश्यक है।

मैं कुछ दिनों पहले नार्थ स्टॉर्म एकेडमी और बॉम्बे यूनिवर्सिटी द्वारा आयोजित किये जा रहे एक ऑनलाइन सेमिनार में भाग ले रहा था। जिसमें 12000 से अधिक शैक्षिक नेतृत्व, कुलपति, प्राचार्य,शिक्षक और प्रशासक देश के सभी कोनों से डिजिटल प्रशिक्षण के लिए पंजीकृत थे। अगले सत्र में और अधिक अपनी बारी का इंतजार कर रहे थे। उनकी उत्साहपूर्ण और स्वयंसेवक के रूप में भागीदारी ने मुझे भविष्य के बारे में आशावादी बना दिया और मै इस बात के लिए आश्वस्त हूँ कि हमारे सक्षम शिक्षकगण, जो तकनीकी-मध्यस्थता शिक्षण के नये मापदंड के साथ जूझ रहे हैं, कौशल विकास की चुनौतियों एवं सीमित संसाधनों के बावजूद भी सफलतापूर्वक इसे आगे बढ़ा पायेगें । राष्ट्र और समाज को केवल उनके मिशन को प्रोत्साहित करने और पूर्णरूप से समर्थन देने की आवश्यकता है।

लेखक भारतीय सेना में अधिकारी हैं, जो वर्तमान में बिहार और झारखंड एन.सी.सी. निदेशालय के साथ पश्चिमी बिहार में तैनात हैं। वह पत्रकारिता और जनसंचार में स्नातकोतर डिप्लोमा के साथ-साथ बैचलर ऑफ़ एजुकेशनल टेक्नोलॉजी में गोल्ड मेडल तथा शिक्षा में पोस्ट ग्रेजुएट एवं डॉक्टरेट हैं। लेख में व्यक्त किये गये विचार उनके निजी हैं।

कोविड-19, आर्थिक विकास एवं पर्यावरण

विवेक मिश्र
लखनऊ विश्वविद्यालय,
लखनऊ
मो. 8896759990

वैश्विक महामारी कोरोना वायरस के चलते कुछ रेटिंग एजेंसियों का अनुमान है कि इस वित्तीय वर्ष विकास दर शून्य रह सकती है वहीं दो रेटिंग एजेंसियों का मानना है कि भारतीय अर्थव्यवस्था की विकास दर नकारात्मक हो जाएगी।

गौरतलब है कि संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (UNEP) की रिपोर्ट के अनुसार, इंसानों को होने वाले 60% संक्रामक रोगों के मूल स्रोत जानवर होते हैं। इबोला (Ebola), एचआईवी (HIV), एवियन इन्फ्लूएंज़ा (Avian influenza-AI), फ्लू (Flu), ज़ीका (Zika), सार्स (SARS)(शायद कोरोनावायरस भी) जैसी बीमारियों की वजह से अब यह आँकड़ा 75% हो गया है। पिछले दो दशकों में इन उभरती बीमारियों से हुई आर्थिक नुकसान की लागत 100 बिलियन डॉलर से अधिक रही।

महात्मा गांधी ने कहा था- पृथ्वी के पास सभी मनुष्यों की जरूरत पूरी करने के लिए संसाधन प्रदान करने की पर्याप्त क्षमता है, लेकिन लालच पूरा करने के लिए नहीं। वर्तमान वैश्विक संकट कोरोना वायरस कहीं न कहीं पर्यावरण को पूरी तरह दरकिनार कर किए जा रहे अनियोजित विकास और हमारे कभी न खत्म होने वाले लालच का प्रतीक है। दरअसल अनियोजित विकासात्मक गतिविधियों में वृद्धि से वन्यजीव अधिवासों में लगातार कमी आ रही है तथा इसके कारण रोगजनकों का प्रसार तेज़ी से पशुधन और मनुष्यों में हो रहा है।

अंधाधुन विकास के कारण महामारी, वायु प्रदूषण, ठोस कचरे का प्रबंधन, पानी की किल्लत, गिरता भूजल स्तर, जल प्रदूषण एवं संरक्षण, वनों की गुणवत्ता और संरक्षण की कमी, जैव विविधता के नुकसान और भूमि/मृदा क्षरण भारत में प्रमुख पर्यावरणीय मुद्दे हैं, जिनका समाधान खोजना वर्तमान परिस्थितियों में बेहद ज़रूरी हो गया है।

जलवायु परिवर्तन पर अंतर-सरकारी पैनल' (IPCC) की एक रिपोर्ट के अनुसार, वर्ष 2100 में तापमान में वृद्धि को 1.5°C से नीचे रखने हेतु,वर्ष 2030 तक ग्रीन हाउस गैस (GHG) के उत्सर्जन में 45% की कटौती करनी होगी, साथ ही GHG को वर्ष 2010 के स्तर से नीचे और वर्ष 2050 तक स्पष्ट रूप से शून्य तक करने की ज़रूरत है। अर्थात् हमारे पास दुनिया भर के अनेक देशों की विकास आकांक्षाओं को सुनिश्चित करते हुए कार्बन डाईऑक्साइड के उत्सर्जन में गहन कटौती करने हेतु केवल 10 वर्ष का समय ही शेष है।

वर्तमान में कम हो रहे प्राकृतिक संसाधनों के कारण विभिन्न राष्ट्रों के बीच परस्पर संघर्ष की तैयार होती भूमिका और इस प्रकार वैश्विक अशांति का खतरा सर्वाधिक चिंता का विषय है। 94% विशेषज्ञों का मत है कि जलवायु परिवर्तन के कारण खाद्य सुरक्षा का खतरा बढ़ेगा, वर्ष 2040 तक वैश्विक सुरक्षा के खतरों के कारण राष्ट्रों के बीच संघर्ष होगा। यदि वर्तमान परिदृश्य में देखा जाए तो कोरोना वायरस को लेकर अमेरिका और चीन के बीच आरोप-प्रत्यारोप, चीन, पाकिस्तान-भारत जल विवाद (भारत के विभिन्न राज्यों के बीच भी), अमेरिका का पेरिस समझौते से अलग होना इसके प्रमुख उदाहरण हैं।

वहीं दूसरी ओर मूल समस्या यह है कि हमने आर्थिक विकास और पर्यावरण को परस्पर विरोधी मान लिया है। हमने मान लिया है कि यदि हमें सड़कों/आवासों का निर्माण करना है तो पेड़ों और जंगलों को काटना आवश्यक है, किंतु सच्चाई यह है कि बिना स्वच्छ पर्यावरण के सतत् विकास असंभव है। पर्यावरण संरक्षण और आर्थिक विकास को साथ-साथ करने के लिए हमें हरित अर्थव्यवस्था की अवधारणा को अपनाना होगा।

हरित अर्थव्यवस्था का उद्देश्य टिकाऊपन, विकास के सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय आयामों को संतुलित करके सभी के लिये समान अवसर प्रदान करना है। यदि हम हरित अर्थव्यवस्था की अवधारणा को पूर्ण मनोयोग से क्रियान्वित करने के लिए दृढ़ संकल्पित हों तो मनुष्य और प्रकृति का सह-संयोजन बना रह सकता है और हमें यह कदापि नहीं भूलना चाहिए कि मनुष्य का अस्तित्व तभी तक है जब तक यह सह-संयोजन कायम है।

व्यापक रूप से देखा जाए तो विकास और पर्यावरण के बीच संतुलन के निम्नलिखित उपाय अपनाए जा सकते हैं- मौद्रिक लागत की तुलना में पर्यावरणीय लागत को अधिक महत्व देना, विभिन्न सरकारों (सरकारी एजेंसियों सहित) में सहभागिता, व्यापक जन-जागरूकता, योजना बनाते समय पर्यावरणीय पहलुओं पर व्यापक विचार, आर्थिक परियोजनाओं को शहरी आबादी से दूर विकसित करना और नीति निर्धारकों की दृढ़ इच्छा शक्ति इत्यादि।

निष्कर्ष रूप में हमें यह समझना होगा कि हम आज उस दोराहे पर खड़े हैं जहां हमारे द्वारा लिया गया एक गलत कदम मनुष्य जाति के अस्तित्व के लिए ही खतरा बन सकता है। हमें इस कुत्सित विचार से बाहर आना होगा कि प्रकृति का निर्माण सिर्फ और सिर्फ मनुष्य के उपभोग के लिए हुआ है। हमें समझना होगा कि मानव जाति का अस्तित्व प्रकृति के साथ प्रति संतुलन में है। मनुष्य तभी तक जीवित हैं जब तक पेड़-पौधे,जीव-जंतु व अन्य प्राकृतिक संरचनाएं मौजूद हैं और हम यह बात जितनी जल्दी समझ लेंगे, हमारे और हमारी आने वाली पीढ़ियों के अस्तित्व के लिए उतना ही अच्छा होगा।

कोरोना संकटः आपदा में अवसर

डॉ. सुरेन्द्र भास्कर
Asst. Land Settlement Officer
Sikar (Rajasthan)
M : 09414351564

पिछले वर्ष के अंत में चीन के वुहान शहर से निकला कोरोना वायरस (कोविड-19) आज पूरे विश्व को अपनी गिरफ्त में ले चुका है। यह लेख लिखे जाने तक दुनियाभर में कोरोना वायरस से 70 लाख से अधिक लोग संक्रमित एवं 4 लाख मौतें हो चुकी हैं। भारत में भी कोरोना मरीजों की संख्या अब तक 2.76 लाख पहुँच गई है जबकि साढ़े सात हजार से अधिक लोग मारे गये हैं। इस विभीषिका को देखते हुए विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कोरोना संक्रमण को एक वैश्विक महामारी घोषित कर दिया है। इस महामारी के वैश्विक प्रसार के साथ-साथ हर समाज की विसंगतियां भी सामने आ रही हैं। इस बीमारी से उपजे संकट के कारण दुनिया के अधिकतर देश लॉकडाउन की चपेट में हैं। वैश्विक स्तर पर कोरोना वायरस ने स्वास्थ्य सेवाओं को बुरी तरह प्रभावित किया है। इस महामारी का अब तक कोई इलाज नहीं खोजा गया है फिर भी अच्छी बात यह है कि पूरे विश्व में लगभग दो मिलियन मरीज स्वस्थ होकर अपने घर जा चुके हैं। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद मानव जाति के सम्मुख आये इस सबसे बड़े संकट ने कहीं न कहीं मनुष्य को यह सोचने पर मजबूर कर दिया है कि हम प्रकृति के समक्ष कितने असहाय हैं। दो महिने से अधिक लॉकडाउन के बाद भारत सरकार ने एक जून से अनलॉक शीर्षक से शिक्षण संस्थाओं, कोचिंग, जिम, सिनेमा इत्यादि के अतिरिक्त लगभग सभी सेवाओं की आवश्यक दिशा निर्देशों के साथ वापस बहाली शुरू कर दी है।

एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में संक्रमण से फैलने वाले इस वायरस के अभी तक अपने देश में सामुदायिक स्तर पर प्रसार की पुष्टि नहीं हुई है लेकिन दिल्ली एवं मुम्बई जैसे महानगरों में स्थिति भयावह है। यह वायरस लगातार अपना स्वरूप बदल रहा है जिसके परिणामस्वरूप कई लोगों की जांच रिपोर्ट बिना लक्षण दिखे भी पॉजीटिव आई है। लॉकडाउन के खुलने के बाद संक्रमित लोगों की बढ़ती संख्या गंभीर चिन्ता की सूचक है। सार्वजनिक स्वास्थ्य विशेषज्ञ बताते हैं कि भारत में अब तक बहुत से लोगों का परीक्षण ही नहीं किया गया है। अशिक्षा, गरीबी, स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता का अभाव और कमजोर स्वास्थ्य प्रणाली आने वाले दिनों में अपने लिए चुनौती साबित होगी। यहां तक की देश के कई भागों में आवश्यक सेवाओं में कार्यरत कार्मिकों के पास भी मास्क एवं

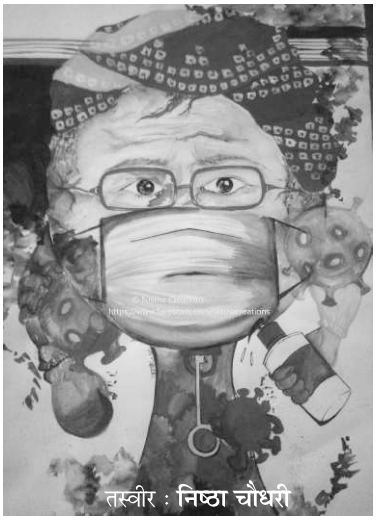

तस्वीर : निष्ठा चौधरी

सेनिटाइजर का अभाव देखा गया है। हालांकि इस दौरान बेसिक सुविधाओं के अभाव में भी कई लोग मजबूत मनोबल के साथ संकट की इस घड़ी में एक दूसरे व्यक्तियों की मदद करते दिखाई दिये। अगर कोरोना वायरस का संक्रमण स्थानीय स्तर पर होता है, तो आबादी का एक बड़ा गरीब तबका निश्चित रूप से भारी नुकसान में रहेंगा, क्योंकि वह उतना शिक्षित नहीं हैं कि नए कोरोना वायरस के बारे में पर्याप्त रूप से अवगत हों।

कोरोना वायरस का असर स्वास्थ्य सेवाओं के साथ-साथ अर्थव्यवस्था पर भी देखा जा रहा है। समूची दुनिया इस वक्त आर्थिक मंदी की चपेट में है। भारत भी कोरोना के दुष्प्रभावों से अछूता नहीं है। देश की सभी औद्योगिक ईकाइयों के अचानक बंद हो जाने से करोड़ों लोग बेरोजगार हो गये। गरीबी से बेहाल दिहाड़ी मजदूर असुरक्षा की स्थिति में सब कुछ छोड़कर पैदल ही अपने घर को रवाना हो गया। करोना में सबसे अधिक परेशानी मजदूर वर्ग को हुई जो आज भी पहले दिन की तरह अपने कार्यस्थल से मूल निवास पर जाने के लिए दर्द ठोकरें खा रहा है। इस दौरान बॉलीवुड अभिनेता सोनू सूद एक मसीहा के रूप में उभरा और अकेले ही बारह हजार से अधिक मजदूरों को उनके गृह स्थान तक पहुँचाया। सरकार ने भी इन श्रमिकों को अपने गंतव्य तक पहुँचाने के लिए कई प्रयास किए हैं परंतु उनको पर्याप्त नहीं कहा जा सकता है। यह बात सही है कि जिस व्यक्ति के दिमाग में कोई बात जितनी लेट समझ में आती है उतने ही देरी से उसके दिमाग से वह बात वापस निकलती है। इसलिए जहां एक ओर कई देशों में औद्योगिक ईकाइयां और कार्य वापस शुरू हो चुका है वहीं अपने देश में श्रमिकों का पलायन अभी भी जारी है जिससे देश के उत्पादन पर बुरा असर देखा जा सकता है। इससे हालांकि स्थानीय निकायों इकाइयों में वहां के श्रमिकों के लिए रोजगार की अधिक संभावनाएं देखी जा सकती है। कई राज्यों ने तो इस अवसर को भुनाने के लिए स्थानीय स्तर पर कार्य करना भी शुरू कर दिया है। यह अच्छा है यदि श्रमिक को अपने आसपास के क्षेत्र में कार्य करने का मौका मिला तो वह अपने परिवार और समुदाय की बेहतर तरीके से देखभाल कर सकता है। सरकार को इन श्रमिकों को रोजगार देने के लिए नरेगा की सेवाओं में विस्तार करना चाहिए ताकि उनकी ऊर्जा का सकारात्मक दिशा में इस्तेमाल किया जा सके।

प्रकृति की हर त्रासदी नया संदेश लेकर आती है। अतः अब कोरोना वायरस से उपजे संकट को भी अवसर में बदलने का समय आ गया है। इसके लिए हमें अपनी रणनीतियों की समीक्षा करके नये तरीके से समायोजित करना चाहिए। आज हमारे पास प्रतिभा और क्षमता दोनों है। इसके लिए हमें ब्रिटेन के पूर्व प्रधानमंत्री विंस्टन चर्चिल के इस कथन को याद रखना चाहिए कि 'कभी भी संकट को व्यर्थ न जाने दें' अर्थात चुनौतियों को भी अवसर के रूप में इस्तेमाल करना चाहिए। इसके लिए सर्वप्रथम हमें कोरोना के इलाज के साथ इसे और अधिक फैलने से रोकना होगा। इसके लिए पुणे में स्थित

राष्ट्रीय विषाणु विज्ञान संस्थान आइसीएमआर निरन्तर अपना शोध कर रहा है। कोरोना के इलाज के लिए 55 से अधिक देशों को क्लोरो हाइड्रोक्विनीन दवा का निर्यात कर हमने वैश्विक स्तर पर इस दिशा में आत्मनिर्भरता का परिचय दिया है। इस भीषण रोग से लड़ने के लिए हमें बहुत जल्द निजी सुरक्षा उपकरण (पी.पी.ई.), एन - 95 मास्क, कम लागत वाले वैंटीलेटर, टैस्टिंग तकनीक और विश्लेषणात्मक उपकरणों के विकास एवं उत्पादन पर जोर देना होगा। चरक जैसे चिकित्सक की मातृभूमि भारत, अंग्रेजी राज की स्थापना के बाद अपने समृद्ध प्राचीन चिकित्सकीय ज्ञान को उपेक्षित करना शुरू कर दिया था। अब हमें पुनः अपनी पुरानी विद्या को पुनर्जीवित करने की जरूरत है। कोरोना जैसी कई गंभीर बीमारियों की रोकथाम में रामबाण के रूप में प्रयुक्त भारतीय आयुर्वेद औषधियों को अब विश्व पटल में मान्यता दिलाने का प्रयास करना चाहिए। इसके लिए आयुर्वेद में वर्णित तुलसी, गिलोय, नीम, अश्वगंधा आदि अनेक जड़ी बूटियों से बनी औषधियों पर आज तत्काल शोध करने की आवश्यकता है। साथ ही भारतीय संस्कृति का पर्याय बने योग को भी दुनिया में प्रचारित करने का यह उचित समय है। कारोना में कई देशों द्वारा दोनों हाथ जोड़कर नमस्ते के अभिवादन से लेकर मृत्यु पर दाह संस्कार सहित कई भारतीय हिंदू रीतियों के महत्व को स्वीकारा जा रहा है।

कोरोना के प्रकोप से शिक्षा जगत और पठन-पाठन भी संकट में है। वर्तमान में कक्षा-कक्ष के विकल्प के रूप में ऑनलाइन शिक्षण कराया जा रहा है। अपने देश के अधिकांश संस्थानों में न तो ऑनलाइन शिक्षण के लिए पर्याप्त आधारभूत ढांचा मौजूद है और न ही इसके लिए सभी शिक्षक प्रशिक्षित फिर भी हर संस्था ऑनलाइन शिक्षा प्रदान करने की भेड़चाल में लगा हुआ है। देश के दूरदराज ग्रामीण इलाकों में नेटवर्क की समस्या है जिसे पाटने के लिए आकाशवाणी एवं दूरदर्शन पर शिक्षण कार्यक्रमों को संचालन किया जा रहा है। इस समय अधिकतर स्कूलों में सत्र का अंत करके बच्चों की ग्रीष्मकालीन छुट्टियां कर दी जाती है लेकिन इस बार फीस डुबने की आशंका में निजी शिक्षण संस्थायें ऑनलाइन शिक्षा के नाम पर अत्यधिक चिन्ता प्रकट कर रही है। मनोविज्ञानिकों एवं समाजशात्रियों ने बच्चों के लगातार लम्बी अवधि तक कम्प्यूटर, इंटरनेट एवं मोबाईल के सम्पर्क में रहने को स्वास्थ्य के लिए हानिकारक माना है। आज तक जिन इलैक्ट्रोनिक खिलौनों को हम बच्चों से दूर रखने की वकालत कर रहे थे लॉकडाउन के समय में उन्हें समय की मांग बताकर जायज ठहराने लगे है। बेहतर होता यदि इस समय हम बालकों को प्रकृति की गोद में पर्यावरण एवं सामाजिक शिक्षा का व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करते। यह निश्चित है कि आने वाला समय सही मायने में डिजिटल युग होगा अतः हमें आधारभूत सुविधाओं का विस्तार करने की तत्काल आवश्यकता है।

कोरोना वायरस संक्रमण के संकट में देश की अर्थव्यवस्था को नई गति देने के लिए सरकार ने 20 लाख करोड़ का प्रोत्साहन पैकेज जारी किया है। इस पैकेज से कारोबार करने वालों विशेष रूप से सूक्ष्म, लघु एवं मझोले उद्यमों (एम.एस.एम.ई.) को नई ऊर्जा और गति मिलेगी। उम्मीद है देश के मजदूर, श्रमिक और किसानों को इन आर्थिक सुधारों का उचित लाभ प्राप्त होगा। विकास के नए युग की सूत्रपात करने एवं देश को आत्मनिर्भर बनाने के लिए हमें तत्काल कृषि व्यवस्था में आधारभूत सुधार, औद्योगिक विकास, तर्कसंगत कर प्रणाली और उसका सरलीकरण और स्थानीय स्तर पर रोजगार प्रदान करने एक मजबूत वित्तीय प्रणाली विकसित करने जैसे साहसिक निर्णय और लेने होंगे।

लॉकडाउन के 2 महीनों में लोग प्रकृति के साथ सामाजिक रिश्तों की महत्वता समझने लगे हैं। सोशल डिस्टेनसिंग का वास्तविक अर्थ भौतिक दूरी समझते हुए लोग वापस गावों में अपने परिवार की ओर रुख करने लगे हैं। इस भागदौड़ की जिंदगी में अधिक से अधिक कमाने की लालसा में जो लोग अपने परिवार को कहीं बहुत दूर छोड़ चुके थे, आज उनके साथ क्वालिटी टाइम इन्जॉय कर सामाजिक ताने-बाने को वापस मजबूत कर रहे हैं। कोरोना संकट में प्रकृति भी शुद्ध हुई है। अमूमन मई व जून महिने में तपने वाली गर्मी के तेवर इस साल तुलनात्मक रूप से ढ़ीले नजर आये हैं। हर दूसरे सप्ताह में मौसम में बदलाव देखा गया है और कहीं ना कहीं बरसात भी होती रही है। ग्लोबल वार्मिंग से परेशान दुनिया के लिए यह प्राकृतिक बदलाव एक सुखद भविष्य का सूचक है। लॉकडाउन में गाड़ियों से निकलने वाले धुंए में कमी आने से पर्यावरण में सुधार देखा गया है। इस दौरान हर प्रकार का प्रदूषण घटा है। मेरे शहर के कई साथी यह कहते हैं कि अब रात को उन्हें आसमान साफ दिखाई देता है और जब सुबह उठते हैं तो चारों तरफ पक्षियों की आवाज और प्राकृतिक छटा उनका अनायास ही मुंह मोह लेती है। लॉकडाउन में लोग प्रकृति की महत्वता समझने लगे हैं। इस भागदौड़ भरी जिंदगी को थोड़ी लगाम लगाने के लिए सरकार को चाहिए कि हर महीने 2 से 3 दिन का लॉकडाउन लागू करे ताकि प्रकृति की सुरक्षा के साथ-साथ सभी लोग घर पर रहकर अपने परिवार को उचित समय दे सकें।

आधुनिकता के इस युग में हर व्यक्ति समयाभाव के कारण भागदौड़ भरी जीवनशैली को अपनाने में लगा है। शारीरिक निष्क्रियता, फास्ट फूड एवं मादक पदार्थों के अत्यधिक सेवन से आज का युवा भीतर से खोखला हो गया है। ऐसे लोगों को कोरोना वायरस का खतरा भी सबसे अधिक है। लॉकडाउन का समय ऐसे युवाओं को आत्ममंथन कर स्वयं को बदलने का वक्त है। कोरोना संकट ने वर्क फ्रॉम होम जैसे नए कल्चर को जन्म दिया है जिसमें व्यक्ति अपने घर पर रहकर भी सुदूर ऑफिस का कार्य बेहतर वातावरण में संपादित कर सकता है। दुनिया के ज्ञात इतिहास में शायद ही पहले कभी ऐसा हुआ होगा जब इतने व्यापक स्तर पर सरकारी और स्वास्थ्य एजेंसियां, गैर सरकारी संगठन, वैज्ञानिक व मैडीकल विशेषज्ञ, अर्थशास्त्री एवं नीतिनिर्माता, सब एक साथ किसी चुनौती से निपटने के लिए अनवरत काम कर रहे हैं।

आने वाले समय में अपने को कोरोना वायरस के साथ ही जीना होगा इसलिए इससे बचाव से संबंधित उपायों को अपने जीवन में अपनाना ही होगा। इतिहास गवाह है कि भारत के लोगों में अद्भुत क्षमता एवं सामाजिक समझ है। हमनें पहले भी ऐसी चुनौतियों का सफलतापूर्वक मुकाबला किया है। अपने अद्म्य साहस एवं बुद्धिमता को पहचानते हुए सभी भारतीयों को अब आपदा को अवसर में बदलने का दृढ़ संकल्प लेना होगा। स्वामी विवेकानंद जी ने कहा है जितना बड़ा संघर्ष होगा जीत उतनी ही शानदार होगी। आओ, हम सभी मिलकर संकट को एक अवसर में बदलते हुए श्रेष्ठ भारत की संकल्पना को साकार करें।

इतिहास में महामारी याद रखी जाएगी तो सेवा भी, जब मोर्चा शासन ने नहीं घर की महिलाओं ने संभाला !

रेखा भाटिया
शार्लिट, नार्थ कैरोलिना
(अमेरिका)
rekhabhatia@hotmail.com

विधि का विधान है यह महामारी या इंसान की प्रकृति से कि गयी छेड़छाड़ का दुष्परिणाम या प्रत्येक सौ वर्षों के बाद एक ऐसा महामारी का दौर आता ही है विश्व के इतिहास में, इसका उत्तर समय के साथ ही मिलेगा। लेकिन आज विश्व में मानव की सबसे बड़ी आपदा और चुनौती बन चुकी कोरोना महामारी ने मार्च महीने के शुरुवाती दिनों में अमेरिका के कई स्टेट्स में दस्तक देना शुरू कर दिया था। अभी मृत्यु दर के आंकड़ों ने सैकड़े को नहीं छुआ था। कई स्टेट्स से लॉक डाउन की खबरें आनी शुरू होने के साथ ही लोगों में डर और दहशत की लहर फैलने लगी। सभी लोगों ने जरूरी सामान, खाने-पीने की वस्तुओं का स्टॉक भरने के लिए ग्रॉसरी स्टोर्स की ओर रुख तेज किया। अचानक बढ़ी भीड़ से ग्रॉसरी स्टोर्स के बाहर लम्बी कतारों में लोग घंटों खड़े अपना नंबर आने का इंतजार करते ! लोगों को इस तरह कतारों में खड़े हो इंतजार करना पड़े, ऐसा जीवन जीने की आदत नहीं थी यहाँ पर। इंडिया में फिर भी शायद लोगों को अचानक इस तरह जीवन बदलने पर इतना झटका नहीं लगता जितना अमेरिका में लोगों को लगा। रातों रात सब बदल गया। लोग अभी जरूरत की वस्तुओं, सफाई का सामान और टॉयलेट रोल को संचय करने की फिक्र कर रहे थे, किसी को ज्ञात नहीं था लॉक डाउन में जरुरी वस्तुओं के लिए स्टोर्स खुले रहेंगे या बंद, होड़ -सी मची हुई थी। स्वास्थ मंत्रालय, हेल्थ एक्सपर्ट की तरफ से अभी मास्क की अनिवार्यता जैसा कोई आदेश पारित नहीं हुआ था। उल्टा यह प्रचार किया जा रहा था केवल बीमार लोग ही मास्क पहनें, जो स्वस्थ हैं उन्हें मास्क पहनना जरूरी नहीं है और टेस्टिंग किट्स ,वेंटिलेटर्स , दस्ताने जैसे साधनों की भारी कमी थी । कोरोना की महामारी अति तेजी से बढ़ रही थी और अमेरिका इस महामारी के लिए तैयार नहीं था।

इसका कोई फायदा भी नहीं है। यह शासन, एक्सपर्ट्स की भूल थी या उन्हें कोरोना वायरस की पूरी जानकारी उपलब्ध नहीं थी ? दोनों कारण हो सकते हैं। हफ्ते के अंदर मृत्यु दर इकाई से दहाई, अगले हफ्ते सैकड़ों में और तीन हफ्तों में हजारों के आंकड़े तक पहुँच गयी। मृत्यु दर के बढ़ने के साथ हॉस्पिटल्स में मरीजों की संख्या अचानक आयी सुनामी-सी बढ़ने लगी, हॉस्पिटल्स में मरीजों को रखने के स्थान की कमी, साथ ही मास्क, जब कभी भी देश के सैनिक युद्ध पर जाते हैं तो लड़ाई में जाने के लिए उन्हें सुरक्षा के लिए सभी प्रकार के साजो-सामान से लैस कर भेजा जाता है। यहाँ स्वास्थ योद्धाओं डॉक्टर्स को अचानक से गिरे महामारी के परमाणु बम से निपटने के लिए सबसे पहली मूलभूल सामग्री मास्क भी उपलब्ध नहीं थे।

दूसरी तरफ स्कूल, कॉलेज अचानक से बंद हो गए, बच्चे घर में रहने लगे। यहाँ स्कूलों में एक व्यवस्था है स्कूलों की बारहवीं तक की

शिक्षा शासन की तरफ से मुफ्त में उपलब्ध कराई जाती है, और जिन बच्चों के पालकों की आय कम होती है या नहीं होती है उन बच्चों को तीन वक्त का खाना स्कूल की केंटीन में तैयार कर मुफ्त में खिलाया जाता है, रोज स्कूल जाने के लिए बसों की सुविधा भी शासन की तरफ से मुफ्त प्रदान की जाती है। केंटीन में काम करने वाले कर्मचारी, बस ड्राइवर्स, हॉस्पिटल्स में डॉक्टर्स और नर्सों के अलावा काम करने वाले अन्य कर्मचारी उनके पास सुरक्षा के मास्क नहीं थे। अचानक बढ़ती मांग से बाजार में मास्कों का अकाल पड़ गया और जो उपलब्ध थे वह भी ख़त्म हो गए। यहाँ पर सोशल मीडिया बहुत बड़ा वरदान बन कर सामने आया, लोग घरों में बैठ कर सोशल मीडिया पर अधिक समय बिताने लगे।

डॉक्टर्स, नर्सें, हॉस्पिटल के कर्मचारी जिनकी जान अब जोखिम में थी, उन्हें सुरक्षा के लिए मास्क उपलब्ध नहीं थे। जो मरीज और उनके परिवार वाले हॉस्पिटल्स में आ रहे थे, उनके पास मास्क नहीं थे। स्वास्थ्य योद्धाओं का दर्द सोशल मीडिया पर पीड़ा बन कर बह निकला।

क्या आप अपने सैनिकों को युद्ध में बिना हथियारों के भेज देते हो ? जब एक सैनिक मरता है तो पूरा देश हिल जाता है, युद्ध छिड़ जाते हैं ? हमें बिना हथियारों के कैसे इस युद्ध में छोड़ दिया गया है ? हमारे साथ ऐसा व्यवहार क्यों ? साथ ही फ्रंट लाइन पर जो डॉक्टर ड्यूटी कर रहे हैं, दिनभर मास्क और सेफ्टी सूट पहने खड़े रहकर चौदह से अधिक घंटे काम कर रहे हैं ,खुद को मास्क और सूट के पीछे छिपाये डरे से ! दिनभर पानी नहीं पी सकते, खाना नहीं खा सकते, बाथरूम नहीं जा सकते, जाना पड़े तो हजारों - पचासों बार हाथ धोना पड़ता है फिर भी डर भीतर रहता है, आखिर वह भी इंसान हैं। पूरे हॉस्पिटल्स जैसे विषाणुओं के डायनामाइट के ढेर पर बैठे हों, सेंट्रल एयर सिस्टम की वजह से विषाणु उसी हवा में घूमते रहते हैं। घर आने पर पहले बहुत ध्यान से पहना सूट फेंको। घंटों शॉवर लो, उसके बाद घर के सदस्यों से, बच्चों से दूर रहकर बात करो इस डर से कहीं इन्हें कुछ हो ना जाये? इतने मानसिक तनाव में काम करते हुए अथक प्रयासों के बाद भी धर्म संकट में पड़ते डॉक्टर किस मरीज को जान बचाने के लिए वेंटीलेटर पर पहले डाला जाये या नहीं, वेंटिलेटर्स की कमी है ! अथक प्रयासों के

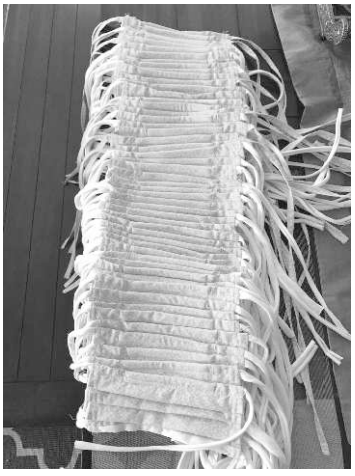

बाद भी जब मरीज डॉक्टर के आगे दम तोड़ देते हैं और मौत का भयावह तांडव डॉक्टर देखते हैं तब उन पर गहरा मानसिक दबाव पड़ता है। इतने मानसिक दबाव में काम करते डॉक्टर्स, उनकी पीड़ा रिस रही है। यह पीड़ा आत्मा से प्राण निचोड़ रही है।सारा विश्व डॉक्टर्स की कमी से जूझ रहा है और मरीजों का इलाज करते जब एक डॉक्टर की उसी बीमारी से मौत हो जाती है तब समाज को ,देश को बहुत बड़ा नुकसान होता है।

इधर बाज़ारवाद की वजह से और अर्थव्यवस्था में होते नुकसान की वजह से प्रदर्शनकारी लॉक डाउन को जल्द हटाने की मांग कर रहे हैं। इंसान ने पैसे का अविष्कार किया और यही पैसा आज इंसान को उसकी जान से अधिक मूल्यवान बनकर उसे चला रहा है।

बिना मेडिकल डिग्री लिए बंद कमरों में बैठ पॉलिसी बनाने वाले, बाज़ारवाद के आगे हथियार डालने वाले सिस्टम, लॉक डाउन में घर से बाहर पार्क में और अन्य स्थानों में घूमते लोग जैसे छुट्टियाँ मना रहे हों, मास्क और अन्य सुरक्षा साधनों की कमी ! किसे दोष दिया जाये? सरकार की लापरवाही, देश में चले आ रहे सिस्टमों की खामियां, कमजोरियाँ, लचरपन ? प्रश्न कई -कई हैं। आज फ्रंट लाइन पर काम करने वाले स्वास्थ्य योद्धाओं की सुरक्षा में असफल इक्कीसवीं सदी के समृद्ध विकसित देश, सभ्य समाजों की पढ़ी-लिखी सोसाईटी, इक्कीसवीं सदी की सबसे बड़ी असफलता है ! कोरोना वायरस के संक्रमण पर कोई दवा अभी काम नहीं कर रही है और इसका इलाज है वैक्सीन जिसे आने में एक साल से अधिक का वक्त लग सकता है और बचाव, सुरक्षा का दूसरा उपाय सावधानी, मास्क पहनना और सामाजिक दूरी बनाये रखना। जहाँ सरकारें असफल हो गयीं मास्क की आपूर्ति में, वहीँ इस अनिवार्य आवश्यकता की आपूर्ति को पूरा करने में मसीहा बनकर ना सही, वरदान बनकर ना सही लेकिन सच्चे सहायक बनकर मदद के लिए आयीं अमेरिका की भारतीय बहनें ,जिन्होंने घर में मास्क बनाकर इस आवश्यकता की आपूर्ति को पूरा करने का प्रयास कर रही हैं।

सोशल मीडिया पर पढ़कर शार्लोट की निकिता मित्तल इंडिया एसोसिएशन ऑफ़ शार्लोट की सदस्य, जिनकी नज़र पड़ी सीमएस शार्लोट स्कूल डिस्ट्रिक्ट को 1000 मास्क की तुरंत जरूरत है, कैंटीन में काम करने वाले, न्यूट्रिशनल वर्कर, बस ड्राइवर और फ्रंट ऑफिस में काम करने वाले कर्मचारी जो कम आय वाले परिवारों के बच्चों के लिए गर्म खाना बनाकर बसों से सारे शहर में भिजवा रहे हैं, उनके लिए। इनमें से कई परिवारों के पालक उनका जॉब लॉक डाउन की वजह से गवां चुके हैं। निकिता ने तुरंत अन्य सदस्यों से संपर्क किया, एक ग्रुप बनाया गया। मास्क का सारा खर्चा इंडिया एसोसिएशन ऑफ़ शार्लोट वहन कर रहा था। यहाँ रहने वाली भारतीय महिलायें जो अब घर से जॉब का काम करने

के साथ, बच्चों को घर में स्कूल की पढ़ाई, होम वर्क, घर का काम, घर पर ही खाना बनाना सभी संभाल रही थीं उनसे संपर्क किया। शीघ्र ही 22 महिलाओं का एक ग्रुप बन गया, सभी पूरे जोश-उल्लास के साथ सेवा के काम में सहायता के लिए सहर्ष तैयार हो गयीं। चार -चार घंटे लाइन में खड़े होकर निकिता कपड़ा खरीद लाती, उसे घर में परिवार की मदद से धोकर, प्रेस कर, बैग्स में डालकर अपनी बेटियों संग पूरे शहर में फैली इन 22 महिलाओं के घर पहुंचाती। इन सेवा के मतवालों को ना मौसम का डर था, ना ही किसी अन्य तरह का। सेवा धर्म मान हर घर के बाहर बैग छोड़ देती। एक हफ्ते के भीतर 250 मास्क सीमएस की वेबसाइट पर दी गयी गाइड लाइन को ध्यान में रखकर तैयार हो गए। तैयार मास्कों को हर घर से इकठ्ठा कर फिर सावधानी से एक-एक मास्क ज़िपलॉक में पैक कर सीमएस ऑफिस में पहुंचाए गए। दूसरे हफ्ते और अधिक मास्कों की डिमांड आ गयी। पहले से अधिक भारतीय महिलायें इस नेक कार्य में जुट गयी। कपड़े की बाजार में कमी थी, इलास्टिक भी नहीं मिल रहा था। इन भारतीय महिलाओं ने नानी-दादी से सीखे नुस्खे, उनके अनुभवों से सीखा-सीख कि अभावों में किसतरह दिमाग और हुनर का इस्तेमाल कर जरूरत को पूरा किया जाता है। कपड़ा घर से, कपड़े की रिबिंस बना मास्क पर लगा बहुत सुन्दर मास्क समय पर बना कर मांग को पूरा करती रहीं और कर रही हैं। निकिता के ग्रुप ने लेटिन अमेरिकन चैम्बर, होमलेस शैलटर, घरेलू हिंसा की शिकार महिलाओं की मदद करने वाली संस्था इन संस्थाओं के लिए मास्कों की आपूर्ति शुरू कर दी। यहाँ बताना उचित होगा गरीबी इस देश में भी बहुत है और अचानक लॉक डाउन से कई गरीबों के जॉब चले गए और घर में रहने से घरेलू हिंसा में अचानक 40 प्रतिशत की वृद्धि आ गयी है। मास्क खरीदने के लिए इन संस्थाओं के पास बजट नहीं था। मास्क सेवा के साथ ही पता चला यह भारतीय ग्रुप शार्लोट सिटी में कई सेवा के कार्य कर चुका है, शहर के कई सार्वजनिक स्थानों में भारतीय कलाकारों ने अपनी कला और उन स्थानों को चित्रकारी से खूबसूरत बनाया, गरीबों की फ़ूड बैंक में खाने की वस्तुएँ नियमित दान करते हैं। आज इन कलाकारों ने ब्रश की जगह सिलाई मशीन हाथ में ले ली है। शार्लोट में ही दूसरे सेवा ग्रुप सत्य सांई बाबा ग्रुप की सदस्य डॉ साई लक्ष्मी ने डॉक्टर, हॉस्पिटल्स की जरूरतों को समझ अपने ग्रुप की भारतीय महिलाओं को संपर्क किया। इस ग्रुप में आठ महिला सदस्यों की टीम है जिन्होंने मास्क की सिलाई का काम किया।

नौ परिवारों ने जिम्मेदारी संभाली कपड़ा खरीदने की घंटों लाइन में लगकर, फिर घर - घर कपड़ा पहुँचाया। तीन सौ घंटों की कार्य सेवा, 725 मास्क बनाये गए और पहुंचाए गए डाक्टरों की ऑफिस, हॉस्पिटल्स, वृद्धाश्रम, स्कूल्स में। डॉक्टर ऑफिस और हॉस्पिटल्स में जाने वाले मास्क में एक खास तरह का जेब सीना पड़ता है, उस एक मास्क को बनाने में 40 मिनट का समय लगता है। मास्क का खर्चा इसी ग्रुप ने उठाया। सत्य साई ग्रुप विश्वभर में विभिन्न क्षेत्रों में जरुरत मंदों की सेवा में वर्षों से निरंतर कार्यरत है।

तीसरा ग्रुप सेवा में आगे आया सेवा इंटरनेशनल जिसकी योजना विश्व में 1000 शाखायें बनाने की है। एक छोटी-सी शाखा शार्लोट में भी है। इस ग्रुप ने जब मास्क बनाने की पहल की तो इस ग्रुप में महिलाओं के साथ पुरुषों, बच्चों ने भी जोर-शोर से हिस्सा लेना शुरू किया और देखते ही देखते 50 लोगों का कर्मवीर ग्रुप बनकर खड़ा हो गया। इस ग्रुप ने फ़ूड बैंक के कर्मचारी, शरणार्थी कैम्प्स , सेंटर्स, विभिन्न पाठशालाएं और शार्लोट के हिन्दू सेंटर मंदिर जो की यहाँ के भारतीय लोगों की सामाजिक संस्था और लाइफ लाइन है उनके लिए मास्क बनाने का बीड़ा उठाया। सैकड़ों मास्क हर हफ्ते विभिन्न संस्थानों में पहुंचाने के साथ इस ग्रुप ने पूरे अमेरिका देश में हॉटलाइन चालू कर दी है जिसमें सभी तरह की सहायता का प्रावधान है जैसे भारतीय बुजुर्ग माता-पिता के लिए ग्रॉसरी, दवाईयाँ लेने से लेकर हर तरह की सेवा उपलब्ध कराई जाती है। यह ग्रुप प्लाज्मा डोनर ढूंढकर देता है, फण्ड इकठ्ठे करता है, भारत में सहायता के लिए फंड इकठ्ठा करता है। इस ग्रुमें बहुत युवा बच्चे सेवा का कार्य कर रहे हैं, साथ ही महिलाएँ इस ग्रुप के साथ अन्य तीन ग्रुप्स के लिए भी मास्क बना रही हैं।

धन्य है यह भारतीय महिलाएँ जो कई मोर्चे एक साथ संभाल रही हैं। विश्व में आयी महामारी की आपदा के समय कंधे से कन्धा मिलाकर सेवा का महान कार्य कर, मदद कर मानवता की महक फैला रही हैं। मज़ाक में कई कहती हैं माँ ने इंडिया में कहा सिलाई मशीन चलाना सीख लो, कभी काम आएगा? वर्षों अमेरिका में कभी सिलाई मशीन नहीं चलायी लेकिन माँ की दी गयी सीख आज जान बचाने के साधन के रूप में काम आ रही है।

इतिहास में महामारी याद रखी जाएगी तो सेवा भी, जब मोर्चा शासन ने नहीं घर की महिलाओं ने संभाला!

माही संदेश
मासिक पत्रिका में
विज्ञापन देने के लिए
संपर्क करें
मो. 9887409303
9828672031
9024650482

महामारी अधिनियम, 1897

डॉ.मुकेश अग्रवाल
Ph.D, LL.M, MBA, MJMC, MA
M : 9309250305

कोविड-19 एक वैश्विक महामारी के रूप में विश्व जगत के लिए एक चुनौती लिए खडा है समस्त विश्व कोरेना वाइरस से जनित बीमारी से जुझ रहा है। सभी देशों में इस महामारी से विभिन्न उपायों को प्रयुक्त किया जा रहा है। भारत में महामारी अधिनियम ए 1897 लागू है। सर्व प्रथम महामारी शब्द को समझना वेहद आवश्यक हैमहामारी शब्द का प्रयोग संक्रमण बीमारियों के लिए आता है जो बेहद तेजी से कई देशों में एक साथ लोगों के बीच संपर्क से चलती है। महामारी होने की संभावना होती है। जो वाइरस बिल्कुल नया हो आसानी से लोगों में संक्रमित हो रहा हो और लोगों के बीच संपर्क से प्रभावी होकर निरन्तरता से फैल रहा हो। वर्तमान समय में कोरोना वाइरस भी इन सभी पैमानों को पूरा करता है। भारत में इस अधिनियम के इतिहास को देखें तो 1896-97 में पूना में प्लेग का भयंकर आक्रमण हुआ तत्कालीन अंग्रेज सरकार द्वारा रेड को इस महामारी को रोकने के लिए प्लेग कमिश्नर नियुक्त किया गया था तथा महामारी रोग अधिनियम के अंतर्गत विस्तृत शक्तियां प्रदान की गई थी। विश्व स्वास्थ्य संगठन को किसी बीमारी को महामारी घोषित करने का अधिकार होता है। अब तक हैजा, इबोला, वाइरस रोग, प्लेग, इनफलुएंजा सार्स, चेचक, पीला बुखार, जीका वाइरस की बीमारी कोरोना वाइरस, रिफट वैली बुखार, मारवर्ग वाइरस आदि बीमारियों को महामारी घोषित किया जा चुका है । कभी कभी विश्व स्वास्थ्य संगठन किसी बीमारी को एपिडेमिक या फिर पेनेडेमिक घोषित करता है। कोई बीमारी निश्चित दायरें या सीमा में रहती है तो उसे एपेडेमिक कहा जाता हैलेकिन जब वह दूसरे देशों में दाखिल होने लगे और उसके फैलने का खतरा बढने लगे तो उसे पेनेडेमिक कहा जाता है ।

विश्व स्वास्थ्य संगठन कोरोना वायरस :

डब्ल्यू. एच. ओ. द्वारा कोरोना वाइरस को महामारी घोषित कर दिया गया है। यह एक ही समय में दुनिया में फैल रहा है। महामारी घोषित होने का अर्थ सरकार के लिए अलर्ट होता है। केन्द्र सरकार द्वारा इस कोरसेना वाइरस से प्रभावी रूप से निपटने के लिए महामारी अधिनियम 1897 को लागू करने की बात कही है। वर्ष 2020 में इस अधिनियम को लागू करने वाला कर्नाटक पहला राज्य है। इस अधिनियम की मुख्य बातें निम्न प्रकार हैं :-

सार्वजनिक सूचना के जरिये महामारी के प्रसार को रोकथाम के उपाय होंगे ।

सरकार को पता लगे कि कोई व्यक्ति या व्यक्तियों का समूह महामारी से ग्रस्त है तो उन्हें किसी अस्पताल या अस्थाई आवास में रखने का अधिकार होगा।

महामारी अधिनियम 1897 की धारा 3 में जुर्माने का प्रावधान भी है । सरकारी आदेश नही मानान अपराध होगा और आइ.पी.सी. की धारा 188 के तहत सजा भी मिल सकती है।

अधिनियम की धारा 2 के अनुसार - जब राज्य सरकार को किसी समय ऐसा लगे कि उसके किसी भाग में किसी खतरनाक महामारी का प्रकोप हो गया है या होने की आशंका है तब अगर वह राज्य सरकार यह समझती है कि उस समय मौजूद कानून इस महामारी को रोकने के लिए नाकाफी है तो कुछ उपाय कर सकती है। ऐसे उपाय जिसमें लोगों को सार्वजनिक सूचना के जरिये रोग के प्रकोप या प्रसार की रोकथाम हो सके। धारा 2 (2) के तहत जब केन्द्र सरकार को ऐसा लगे कि भारत या उसके अधीन किसी भाग में महामारी फैल चुकी है या फैलने का खतरा है तो रेल या बन्दरगाह या अन्य तरीके से यात्रा करने वालों को जिनके बारे में में यह शंका हो कि वह महामारी से ग्रस्त है उन्हें किसी अस्पताल या अस्थाई आवास में रखने का अधिकार होगा। इस अधिनियम की धारा 4 कानूनी सूरक्षा के बारे में जो अधिकारी इस एक्ट को लागू कराते हैं उनकी कानूनी सूरक्षा भी यही एक्ट सूनिश्चित करता है। ये धारा सरकारी अधिकारी को कानूनी सुरक्षा प्रदान करता है।

केन्द्र सरकार द्वारा इस महामारी अधिनियम में (संशोधन) महामारी रोग संशोधन आदेश 2020 को लागू किया गया है। जिसके तहत धारा 1 ए में संशोधन किया गया है।

हिंसा की गतिविधि:- इसे महामारी के समय कार्य कर रहे स्वास्थ्य सेवा कर्मियों के सम्बन्ध में परिभाषित किया गया है। इसके अंतर्गत स्वास्थ्य सेवा कर्मियों को तंग करने वाले, अपहानि, क्षति, नुकसान पहुंचाने वाले, अभित्रास पहुंचाने, या जीवन पर खतरा पैदा करने वाले कृत्य शामिल होंगे इसके अलावा स्वास्थ्य सेवा कर्मियों के कर्तव्य के निर्वहन के दौरान (किनीकल एस्टब्लेसमेंट)अथवा और कहीं और किसी प्रकार की बाधा पहुंचाना भी हिंसा की गतिविधी के अंतर्गत आयेगा ।

सजा के तौर पर 7 साल की सजा और 5 लाख रूपया जुर्माना या दोनों हो सकते हैं । ऐसे मामले की जांच वरिष्ठ इंसपैक्टर के स्तर पर 30 दिन में पूरा करने और एक साल के भीतर अदालत में इसकी सुनवाई पूरी कर फैसला करने का प्रावधान कर दिया गया है। इस संशोधन अध्यादेश में स्वास्थ्य कर्मियों पर हमला गैर जमानती अपराध की श्रेणी में रख गया है। इस अधिनियम में फुल कोरोना वाइरस एक संकट के रूप में हमारे सामने है इसलिए हम सभी को सरकार द्वारा दिये गये निर्देशों से संशोधन का उद्देश्य स्वास्थ्य कर्मियों को सुरक्षा प्रदान करना है । इस महामारी को एक संकट के रूप में मानते हुए सरकार द्वारा दिये गये निर्देशों का पालन करना चाहिये तथा इस महामारी की रोकथाम करने में पूरा सहयोग एवं समर्थन सरकार को करना चाहिये जिससे कि हम इस महामारी से लड सकें।

कर्तव्य है सबसे पहले- अभिषेक यादव

रोहित कृष्ण नंदन

अभिषेक यादव राजस्थान तहसीलदार सेवा के अधिकारी के रूप में महवा तहसील जिला दौसा में सेवारत हैं और एक कोरोना योद्धा के रूप में अपनी ज़िम्मेदारी निष्ठापूर्वक निभा रहे हैं

कोरोना संकटकाल में आप ड्यूटी पर तैनात रहे और अभी भी तैनात हैं जब लॉक डाउन हुआ तब परिस्थितियों को किस तरह संभाला...

अभिषेक यादव : 22 मार्च से कोरोना के प्रसार के बाद लॉकडाउन की घोषणा होने के बाद सबसे पहले मुझे उपखण्ड से जिला स्तर पर विभिन्न सूचनाएं प्रेषित करने और जनता को आ रही शिकायतों के निवारण की कार्यवाही के लिए स्थापित किये गए कोविड-19 कंट्रोल रूम के प्रभारी अधिकारी की जिम्मेदारी मिली। बाहर से आने वालों को होम क्वारंटाइन करवाने,जरूरतमंदों को राशन पहुंचाने के साथ-साथ जिला स्तर पर सूचनाएं भिजवाने का कार्य भी समयबद्ध रूप से किया गया। धीरे-धीरे हर रोज प्रशासन के सामने नई-नई चुनौतियां आने लगीं। लॉकडाउन की सख्ती से पालना कराने के साथ ही उस समय गुटखे-तम्बाकू की कालाबाज़ारी और रोक के बावजूद ऊंचे दाम लेकर अवैध रूप से बिक्री की शिकायतें आने पर छापेमारी की। होम क्वारंटाइन का उल्लंघन करने पर लोगों को इंस्टिट्यूशनल क्वारंटाइन में शिफ्ट करने की कार्यवाही की। अभी बाहर से आये प्रवासी मजदूरों को राशन वितरण का पर्यवेक्षण जारी है।

लॉकडाउन तोड़ने की सजा....

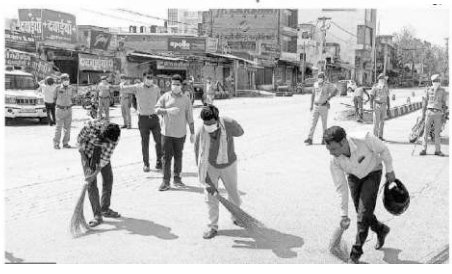

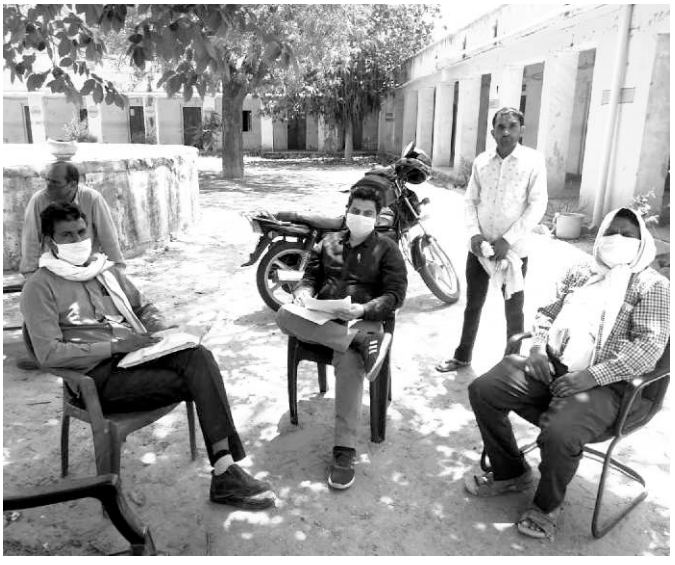

lockdown के दौरान कोई घटना या ऐसी परिस्थिति जो आपको हमेशा याद रहेगी?

अभिषेक यादव : यूँ तो कोरोना की इस अवधि में काफी चीज़ें सीखने को मिली। इस दौरान भरतपुर बॉर्डर पर चेक पोस्ट बनाई गई जिसका प्रभारी मुझे बनाया गया। प्रवासी श्रमिकों को उनके घर तक पहुंचाने की व्यवस्था में जो सुकून मिला वो पल हमेशा याद रहेंगे।

जनता को किस तरह जागरूक किया?

अभिषेक यादव : उपखण्ड अधिकारी महोदय के साथ मिलकर लोगों को जागरूक किया कि बाहर न निकलें। खुद सड़क पर उतरे और लोगों को रोककर समझाइश भी की। कुछ युवा अनावश्यक बिना किसी उचित कारण के बाहर घूमते नजर आते थे जिनको रोककर उनके फ़ोटो उन्हीं के मोबाइल से कांटेक्ट लिस्ट में भेजे गए और कइयों से सड़क पर झाड़ू लगवाई जिससे बाहर घूमने वालों पर लगाम लगी। बाजार में भी जाकर दुकानदारों से समझाइश की गई।

जनता और पाठकों के लिए कोरोना योद्धा के रूप में आपका संदेश?

अभिषेक यादव : लॉकडाउन जरूर हटा है लेकिन खतरा अभी टला नही है इसलिये अनावश्यक बाहर न घूमें। मास्क,सेनेटाइजर का प्रयोग और सोशल डिस्टनसिंग की पालना करें। पॉजिटिव पाए जाने पर घबराएं नही रिकवरी रेट बढ़ रही है मजबूती से इस महामारी का डटकर मुकाबला करें।जरूरतमंदों की मदद करें। जो लोग इस लड़ाई में अग्रिम मोर्चे पर हैं उनका सम्मान करें। मैं चिकित्साकर्मियों और पुलिसकर्मियों के अलावा जमीनी स्तर पर कार्य कर रहे अध्यापकों, ग्रामसचिवों, पटवारियों, आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को विशेष रूप से धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ जिनके सहयोग से ये लड़ाई बेहतर ढंग से लड़ी जा रही है।

यह दौर भी गुजर जायेगा

खौफ के साए में जी रहे हैं,
गम में गम को पी रहे हैं।
कल क्या होगा पता नहीं?
आज सदमे में जी रहे हैं।।
समय ने सबको लाचार कर दिया है
अपने हैं, पर अपनों से ही दूर कर दिया है ।।
जब अपना शरीर साथ ना दे,
अपनों का साथ मिल ना सके
महामारी का डर सताता रहे,
अपनों का गम सालता रहे।
ऐसे भयावह माहौल में,
कोई स्वस्थ कैसे रह सकता है?
अपनों से दूर रहकर सुनो,
कोई प्रसन्न भला रह सकता है??
अग्नि -परीक्षा का दौर है यह,
कुदरत का असीम कहर है यह ।
रे मन! जितना तू चिंतन करेगा,
भय से दहशत से उतना ही तू तरेगा।।
आओ, चिंतन के भाव को हृदय में जगा लें।
प्रभु श्रीराम में मन -बुद्धि को लगा लें।
वे ही इस संकट से निजात दिलाएंगे,
अपनों को शीघ्र अपनों से मिलवाएंगे।।

गीता कोशिक
दिल्ली
editormahisandesh@gmail.com

नीरज गोस्वामी की कलम से

नीरज गोस्वामी

जयपुर, राजस्थान
मो. 98602-11911

ऐ खुदा रेत के सेहरा को समन्दर कर दे
या छलकती हुई आँखों को भी पत्थर कर दे
तुझको देखा नहीं मेहसूस किया है मैंने
आ किसी दिन मेरे एहसास को पैकर कर दे*
पैकर आकृति*
और कुछ भी मुझे दरकार नहीं है लेकिन
मेरी चादर मेरे पैरों के बराबर कर दे

बरसों से जब भी जगजीत सिंह जी की आवाज़ में ये ग़ज़ल उनके अल्बम ऐ साउंड अफेयर को सुनता हूँ तो इसे बार बार रीवाइंड कर सुनने को जी करता है. एक तो 'जगजीत जी की आवाज़' और उस पर ये जादुई अशार मुझे बैचैन कर देते हैं.

इस खूबसूरत ग़ज़ल के शायर हैं जनाब 'डा. शाहिद मीर' साहब. उन्हीं की बेजोड़ किताब 'ऐ समंदर कभी उतर मुझ में' का जिक्र करेंगे. दरअसल इस किताब में मीर साहब के चुनिंदे कलामों का संपादन किया है श्री अनिल जैन जी ने. संपादन क्या किया है गागर में सागर भर दिया है.

पहले तो सब्ज़ बाग़ दिखाया गया मुझे
फिर खुश्क रास्तों पे चलाया गया मुझे
रक्खे थे उसने सारे स्विच अपने हाथ में
बे वक़्त ही जलाया, बुझाया गया मुझे
पहले तो छीन ली मेरी आँखों की रौशनी
फिर आईने के सामने लाया गया मुझे

पद्म श्री 'बेकल उत्साही' साहब ने लिखा है 'हज़रत जिगर मुरादाबादी की खिदमत में रहता था तो वो बार-बार हिदायत करते 'बेटे, बहुत अच्छे इंसान बनो फिर बहुत अच्छे अशआर कहोगे सच है कि अच्छा इंसान ही अच्छी सोच से अच्छी बातें करता है. शाहिद इस कसौटी पर खरे उतरते हैं.'शाहिद मीर' ने राजस्थान के तपते

› डा. शाहिद मीर

सहरा, मध्य प्रदेश की ऊबड़ खाबड़ ज़मीन पर रह कर किस क़दर बुलंदियों को छुआ है जहाँ किसी फ़नकार और कलमकार को पहुँचने के लिए एक उम्र सऊबतें झेलकर भी पहुंचना मुश्किल है'

सूखे गुलाब, सरसों के मुरझा गए हैं फूल
उनसे मिलने के सारे बहाने निकल गए
पहले तो हम बुझाते रहे अपने घर की आग
फिर बस्तियों में आग लगाने निकल गए
'शाहिद' हमारी आँखों का आया उसे ख़याल
जब सारे मोतियों के खज़ाने निकल गए

मध्यप्रदेश के सरुँज जिले में 1949 में पैदा हुए शहीद मीर साहब ने एम.एससी, पी.एच डी. (औषधीय वनस्पति), करने के बाद ने बाड़मेर राजस्थान के राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय में उप प्राचार्य के पद पर काम किया। आपकी 'मौसम ज़र्द गुलाबों का' (ग़ज़ल संग्रह), 'कल्प वृक्ष' (हिंदी काव्य संग्रह) और 'साज़िना' (कविता संग्रह) प्रकाशित हो चुके हैं. उनका कहना है कि विज्ञानं का विद्यार्थी होने की वजह से बौद्धिक स्तर पर किसी एक दृष्टिकोण और वाद को सम्पूर्ण रूप से स्वीकार नहीं किया.

तेरा मेरा नाम लिखा था जिन पर तूने बचपन में
उन पेड़ों से आज भी तेरे हाथ की खुशबू आती है
जिस मिटटी पर मेरी माँ ने पैर धरे थे ऐ 'शाहिद'
उस मिटटी से जन्नत के बागात की खुशबू आती है

उर्दू ज़बान की मिठास, कहने का निराला ढंग और सोच की नयी ऊँचाइयाँ आपको इस किताब को पढ़ते हुए जकड लेंगी. 'बशीर बद्र' साहब ने 'मीर' साहब के लिए ऐसे ही नहीं कहा की' कायनात के बहुत से रंग ज़र्द मौसमों और सुर्ख़ गुलाबों के पैकरों में हमारे सामने ब राहे-रास्त नहीं आते बल्कि उन खूबसूरत अल्फाज़ के शीशों में अपनी झलक दिखाते हैं, जिनमें 'शाहिद मीर' ने खुद को तहलील कर रखा है.'

चिलमन-सी मोतियों की अंधेरों पे डालकर
गुज़री है रात ओस सवेरों पे डालकर
शायद कोई परिंदा इधर भी उतर पड़े
देखें तो चंद दाने, मुंडेरों पे डालकर
आखिर तमाम सांप बिलों में समां गए
बदहालियों का ज़हर सपेरों पे डालकर

डायमंड बुक्स, नयी दिल्ली द्वारा प्रकाशित इस पुस्तक को आप फोन न.011-41611861 या फेक्स न.011-41611866 पर सूचित कर मंगवा सकते हैं, अथवा उनकी वेब साईट www.dpb.in या मेल आई.डी. sales@diamondpublication.com पर लिख कर भी संपर्क कर सकते हैं. आप कुछ भी करें लेकिन यदि आप उर्दू शायरी के कद्रदां हैं तो ये किताब आपके पास होनी ही चाहिए.

उजले मोती हमने मांगे थे किसी से थाल भर
और उसने दे दिए आंसू हमें रूमाल भर
उसकी आँखों का बयां इसके सिवा क्या कीजिये
वुसअतें आकाश सी, गहराईयाँ पाताल भर*
वुसअतें= फैलाव*
जिस्म पर ज़ख्म तीर वाले हैं
हम सलामत ज़मीर वाले हैं
ज़ायका लब पे सूखी रोटी का
सामने ख्वान खीर वाले हैं*
ख्वान = बर्तन*
आत्मा उनकी है अँधेरे में
जो चमकते शरीर वाले हैं

कोरोना योद्धा के रूप में जारी है ज़िम्मेदारी

गीता चौधरी

थानाधिकारी - भाद्राजून
(जालौर)

भरत कोराणा
जालौर राजस्थान
editormahisandesh@gmail.com

कोरोना महामारी के समय पूरा विश्व एक संकट से जूझ रहा है। इस दौरान अधिकारियों, सरकारी कर्मचारियों ने जो साहस , हिम्मत और सूझबूझ दिखाई उस जज्बे को जनता सलाम करती है। दिन रात ड्यूटी करके आपने देश हित में प्रयास करके इस समय शांति और स्वस्थ भारत की मिसाल पेश की। इन्हीं अधिकारियों में एक नाम आता है राजस्थान राज्य के जालौर जिले के

भाद्राजून थाने की थानाधिकारी गीता चौधरी का। चौधरी अपने थाना क्षेत्र के गावों में मय स्टाफ अथक प्रयास करके कोरोना जागरूकता में कार्य किया जो सराहनीय है।

भाद्रजून उप तहसील मुख्यालय है। मारवाड ग्रामीण बैंक की शाखा भी यहाँ है।

बैंक में भीड़ नहीं होने दी...

पेंशन राशि, खाद्य सुरक्षा में आधार लिंक, नये खाते खुलवाने आदि कार्यों हेतु बैंक में जहाँ भीड़ हो सकती थी। शायद ऐसा भी हो सकता था कि भीड़ की वजह से कोरोना वायरस का खतरा बढ़ता परंतु गीता चौधरी ने बैंक में भीड़ इकठ्ठा नहीं होनी दी।

ड्यूटी पर रहीं हमेशा तैनात

ड्यूटी पर चौकस रहकर लोगों को सतर्क किया जो सच में सराहनीय प्रयास था। जब जिला सीमा सील करने की घोषणा की तब तत्परता से जालौर - पाली की सीमा पर मय स्टाफ तैनात रहकर सफल कार्य किया इसलिए स्थानीय जनता ने इनको खूब स्नेह दिया । समय समय पर फ्लेग मार्च, गावों का दौरा करना और लोगों को कोरोना पर जागरूक करना यह इनके ड्यूटी के प्रति ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा को जाहिर करता है। गीता चौधरी महिला थानाधिकारी हैं और महिला होने के नाते अन्य भी कई जिम्मेदारियां होती हैं परंतु इन्होंने कुशलता से परिचय दिया जो इनके देश के प्रति प्यार को दर्शाता है।

थाना क्षेत्र की आम जनता ने कोरोना जागरूकता में किये गए इनके कार्य को सराहा है। सच में गीता चौधरी ने कोरोना योद्धा की मिसाल पेश की है।

लॉक डाउन में पेश की जनसेवा की मिसाल

माही संदेश, जयपुर : सेवा करने का जज़्बा अगर आप में है तो आप नेक दिल इंसान हैं ऐसे ही एक शख्स हैं प्रेम नगर खातीपुरा रोड झोटवाड़ा जयपुर निवासी रोमी कुमावत जिन्होंने अपने साथियों गिरधारी, सरोज, राजेन्द्र कुमावत दिलीप सोनी, चिरंजी लाल सोनी, राकेश सोनी के साथ मिलकर 28 मार्च 2020 से असहाय लोगों के लिए खाना बनाकर बांटना आरम्भ किया, माही संदेश से बात करते हुए रोमी ने बताया कि हमने शुरू में 150 लोगों को खाना बांटना शुरु किया था जो कि अप्रैल के पहले सप्ताह से बढ़कर तकरीबन 1500 लोगों को सुबह -शाम शाम खाना बाँटा और हमें जैसे समय मिलता है बेजुबान जानवरों और पक्षियों के लिए खाना देते थे और हमारे पुलिस वाले भाइयो के लिए भी हम जलपान उपलब्ध करवाते थे। यह खाना हम कनकपुरा निवारू रोड वैशाली नगर सिवार गांव और सिरसी गांव में बांटते थे ये सिलसिला हमारा 30 अप्रैल तक अनवरत रूप से जारी रहा था।

समाज सेवा के कार्य से मिलती है खुशी- मासूमी

माही संदेश : दिल्ली, रोहिणी निवासी मासूमी सैगल अपनी टीम के साथ कोरोना संकट के समय जरूरतमंद लोगों की मदद में जुटी रहीं। इस दौरान इन्होंने पूर्वी दिल्ली में भोजन व राशन का वितरण किया। गौरतलब है कि मासूमी सैगल अस्मिता फाउंडेशन से जुड़ी हुई हैं और समय-समय पर जरूरतमंद लोगों के लिए आर्थिक रूप से भी मदद करने का प्रयास करती रहती हैं। कोरोना संकट के साथ साथ पश्चिम बंगाल में हाल ही आए तूफान में भी मासूमी ने जरूरतमंदों के लिए सहायता राशि भेजी थी। मासूमी ने माही संदेश से बात करते हुए कहा कि उन्हें समाज सेवा के कार्य से बहुत खुशी मिलती है, आगे भी मैं इसी तरह समाज के लिए अपना योगदान देती रहूंगी।

जगद्गुरू कृपालु परिषद संस्था द्वारा लॉकडाउन में कोराना पीड़ितों की सहायता हेतु भारत सरकार एवं उत्तर प्रदेश सरकार को दिया सहयोग

माही संदेश : वैश्विक महामारी कोविड 19 को मद्देनजर रखते हुए जगद्गुरू कृपालु परिषद संस्था द्वारा भारत के प्रधानमंत्री राहत कोष में एक करोड एवं उत्तर प्रदेश सरकार के मुख्यमंत्री राहत कोष में तेईस लाख रूपए का अनुदान किया। साथ प्रवासी मजदूरों एवं स्थानीय गरीब व्यक्तियों को पका हुआ भोजन लगातार 60 दिनों तक वितरित किया। इसके पश्चात् स्थानीय श्यामदासी आश्रम की विधवा माताओं के साथ आसपास के गांवों में गरीब लोगों के लिए एक माह का सूखा राशन गांव के प्रधानों को उपलब्ध कराया गया। श्यामा श्याम धाम समिति प्रेम मंदिर के सचिव कामता प्रसाद वर्मा ने जानकारी देते हुए बताया कि मुख्य चिकित्सा अधिकारी के आग्रह पर जगदुरू कृपालु परिषद संस्था, वृंदावन द्वारा सरकारी क्वारन्टीन सेन्टर कृष्णा कुटीर एवं चैमुहा स्थित एसकेएस कॉलेज क्वारन्टीन केन्द्र पर 30 दिनों तक क्वारन्टीन मरीजों के लिए पौष्टिक आहार वितरित किया गया।

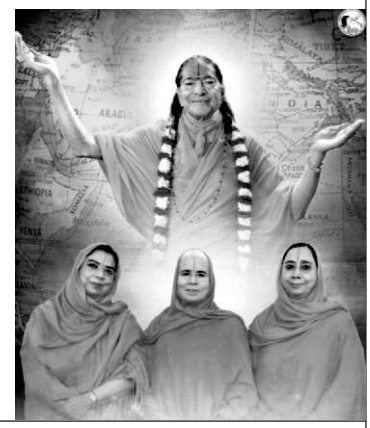

कोरोना पीड़ितों की सहायता हेतु राधागोविंद पब्लिक चैरिटेबल ट्रस्ट, जयपुर द्वारा 5.70 लाख रुपये का सहयोग

जगद्गुरू श्री कृपालु महाराज

माही संदेश : जगद्गुरू श्री कृपालु जी महाराज की प्रचारिका सुश्री श्रीधरी द्वारा संचालित राधागोविंद पब्लिक चैरिटेबल ट्रस्ट,जयपुर द्वारा वर्तमान कोरोना संकट के इस विकट समय में अपनी सामाजिक ज़िम्मेदारी निभाते हुए कोविड-19 से लड़ने के लिए राजस्थान मुख्यमंत्री सहायता कोष कोविड-19 राहत कोष में 5 लाख रुपये की सहायता राशि प्रदान की गई। साथ ही दैनिक भास्कर द्वारा चलाये जा रहे भास्कर फाउंडेशन भोजन सामग्री दान अभियान के तहत भास्कर फाउंडेशन को 100 परिवारों के लिये 70000 रुपये सहायता राशि प्रदान की गई है। ट्रस्ट की अध्यक्षा सुश्री श्रीधरी जी ने अन्य सभी से भी अधिक से अधिक दान करने की प्रार्थना की है । उनका कहना है इस विकट स्थिति में पूरे देश को एकजुट होकर हर प्रकार का सहयोग करना चाहिए। ट्रस्ट के मुख्य सचिव शरद गुप्ता ने आश्वासन दिया कि समाज की भलाई के लिए और ऐसे विकट संकटों से लड़ने के लिए आगे भी ट्रस्ट द्वारा यथाशक्ति सहायता प्रदान की जाती रहेगी।

शहर की ऐसी उदासी

शहर की ऐसी उदासी
देखी नहीं कभी,
ज़िंदगी इस तरह रूमांसी
देखी नहीं कभी।
सहमी-सहमी सी सड़कें है
गमगीन हैं गलियां,
बने ठने बाज़ार की यूं
बंद क्यों अठखेलियां।
कोई बेबसी सी सब तरफ
क्यों ढा रही कहर,
खोज और अनुसंधान के नाम
कोई बो गया ज़हर।
किसी की किसी से नहीं है
बैर ना लड़ाई,
फिर सबके बीच दूरियां
क्यों ले रही अंगड़ाई ।
हर शख्स डरा डरा सा है,
कहीं छिप गया अपनापन,
कुछ देवदूत निस्वार्थ भाव
कर रहे सेवा जतन।
इस युग के स्याह पन्नों पर
जीवन पर भारी मरण हुआ,
अपने सुख, केवल सुख की खातिर
प्रकृति से क्यों खेला ऐसा जुआ।

डॉ. मृणालिका ओझा
कुशालपुर
रायपुर (छत्तीसगढ़)
editormahisandesh@gmail.com

जरूरतमंद परिवारों के लिए 'उड़ान संस्था' बनी उम्मीद की नई किरण

माही संदेश : पूरे देश में लॉक डाउन का माहौल चल रहा है,कोरोना के संकट से निपटने के लिए देश में लागू लॉकडाउन गरीबों के लिए आफत बना हुआ है, पर किसी के प्राणों का लॉक डाउन नहीं होने देने के लिए इस आपदा के समय में उड़ान वेल्फेयर ट्रस्ट द्वारा मानवता की मिशाल कायम की जा रही है। जहां कोरोना वायरस के कहर के चलते सभी लोग दहशत से घरों में बंद हैं वही उड़ान टीम द्वारा आज लगातार 60 दिन हो गए वो सम्मानित परिवार जो परिस्थितिवश बहुत कठिन समय से गुजर रहे हैं उन परिवारों के प्रति अपने दायित्व का निर्वहन करने के लिये 2 चरण में फल एवं भोजन पहुंचाना, जरूरतमंद मजदूर परिवारों को राशन देना, असहाय लोगों की आर्थिक मदद करना, जरूरत होने पर रक्त उपलब्ध कराना, इस तपती गर्मी में बेजुबान जानवरों को फल वितरित करना, सफाई कर्मचारियों का स मान करना, पुलिस प्रशासन का स मान करना और इसके साथ ही आर्थिक रूप से कमजोर ब'ची जिसके पापा नहीं हैं उसकी शादी में सहयोग करना। उड़ान संस्था लॉकडाउन के दौरान आवश्यक सेवाओं के लिए उपलब्ध है और लॉकडॉउन के दौरान लगातार जरूरतमंद लोगों की जरूरतें पूरी कर एक नई उड़ान भर रही है।

वो जा रहे हैं जो गरीब हैं

शहर की बड़ी- बड़ी इमारतों के बाहर
नाम किसी का भी लिखा हो
उन में से हमेशा आती रहेगी
गरीब मज़दूरों के पसीने की गंध...!
वो जा रहे हैं जिन्हें तुमने
दो वक़्त का खाना न दिया
वो जा रहे हैं जिन्हें तुमने
रहने को एक कोना न दिया
वो जा रहे हैं जिन्होंने ढ़ाली थी तुम्हारी छत
वो जा रहे हैं जिन्होंने बनाया था नगर
वो जा रहे हैं जिनके हाथों पर
छाले हैं मशीनों के
वो जा रहे हैं, जिन्होंने
बनाया था तुम्हारा खाना
उठाया था तुम्हारा कचरा
वो जा रहे हैं जिन्हें तुमने
कभी इंसान नहीं समझा
वो जा रहे हैं.... वो जा रहे हैं
तुम ऑनलाइन खाना मंगा रहे हो
वो भूख से मर रहे हैं तुम
50त्न सेल शॉपिंग कर रहे हो
वो नंगे पाँव चल रहे हैं
तुम ष्ट में कंबल ओढ़ सो रहे हो
वो रात भर जाग रहे हैं
वो जा रहे हैं क्योंकि कि
तुम्हें कोई फर्क नहीं पड़ता
वो जा रहे हैं जिन्हें तुम
ट्रकों में भर भर के ले जाते थे रैलियों में
वो जा रहे हैं जो तुम्हारे लिए खड़े थे दोपहर में
वो जा रहे हैं जिन्होंने तुम्हें अपना राजा चुना था
वो जा रहे हैं जिन्होंने तुम पर यक़ीन किया था
वो जा रहे हैं जो गरीब हैं
मज़दूर हैं वो जा रहे हैं
जिनके पास न खाने को रोटी
न सोने को छत है
वो जा रहे हैं जो मारे हैं हालातों के
वो जा रहे हैं सड़क पर
अपनी लहू से दर्द कथाएं लिखते
वो जा रहे हैं कुआँ का मीठ पानी पीने
वो जा रहे हैं उन्हें बुला रहा है
उनका गाँव के बरगद का पेड़
वो जा रहे हैं ....!!

डॉ.सुमित कुमार
बोधगया (बिहार)
मो. 7050537508

कोरोना देवदूतों के नाम

लाडो! कुछ दिन की है बात
मेरी तरह रोक ले तू भी ,
आंखों से बरसात। लाडो।
कंठ रुद्ध है सजल नयन
आहत करती मजबूरी
जो विपदा में हैं उनकी
रक्षा है बहुत जरूरी।
तुझे पता है फैली है कितनी घातक बीमारी।
तुझे न कुछ हो इसीलिए
रखता हूँ तुझसे दूरी
तुझे दुलारूँगा फिर आकर
दुश्मन को दे मात। लाडो।
अब तक तो घर आ जाना था
मुझको लाडो रानी
फेर दिया कुछ नासमझों ने
किये धरे पर पानी
धोखेबाज रहनुमा निकला
लोगों को बहका कर।
दिया धकेल मौत के मुंह में
और छुपा खुद जाकर
दुश्मन बनी देश की अपने
पूरी एक जमात

आशुकवि राजेश राज
गोरखपुर (उत्तर प्रदेश)
मो. 9889029396

कोरोना - कोरोना इफ़ेक्ट लॉक डाउन

सुस्त अमरीका हुआ स्पेन की रफ़्तार भी,
रोक ना पाई वबा को चीन की दीवार भी।

अटकलें इंसान की नाकाम सारी हो गईं,
बम मिसाइल तोप गोले और सब हथियार भी।

दूरबीनों से बचा अब खुर्दबीनें खोज में,
वायरस इंसान पे छुप के करे ये वार भी।

क्या अजब माहौल मौला दिख रहा है आजकल,
दोस्त भूले दोस्ती और दुश्मनी अग़्यार भी।

क़ैद से हैं जा रहे छोड़े कई क़ैदी मगर,
हो गए पिंजरे की तरहा देखिए घरबार भी।

क्या क़यामत, नाव है पर जा नहीं सकते कहीं,
लोग साहिल पर खड़े इस पार भी उस पार भी।

राह सूनी कारवां ठहरे तरसती मंज़िलें,
भीड़ मोटर रेल की दिखती नहीं भरमार भी।

चींटियाँ चिड़ियाँ करे हैं बात आपस में यही,
भीख तक के ए सखी दिखते नहीं आसार भी।

जो महब्बत बख़्शते बाँटते थे उनसे ही अब ख़ौफ़ है,
अब तो मय्यत तक रही ना काँधों की हक़दार भी।

अब डिजीटल ही भला लगता है सबको इन दिनों,
प्यार, महफ़िल, डाक, ड्यूटी, इल्म और व्यापार भी।

उफ़ इबादतगाह तक भी बन्द हर इक हो गई,
अब करम पे चारागर के ताज भी दरबार भी।

कम न आंको ये छटाँकी सा है कोरोना मगर,
रोक दे साँसें पहलवानों की कर बीमार भी।

गर अलामत इस वबा के दिख रहे हों आप में,
ना बनें अपनों के भी और मुल्क के ग़द्दार भी।

फैलने का जो है ज़रिया उस कड़ी को तोड़ दें,
जीत हिंदुस्तान की हो इस वबा की हार भी।

एस. बी. आहत
जयपुर (राजस्थान)
Aahatbol@gmail.com

चेतावनी

पलायन कर रहा हूं
नादान मत समझिए।

कौन अपना कौन पराया?
इतना समझ गया हूं।
बस कुछ यूं समझिए।

अब लौट कर वापिस आऊंगा।
यह वहम भी मत रखना।
दिए कितने जख्म
बस आप यह याद रखना।

हाँ लौटूंगा... तब
जब मेरा मान होगा।
मेरे परिवार भी तुम्हारी
शहरी जाति में शुमार होगा।

बहुत सह लिया...
मजदूर बनके मजबूर बनके।

अब न नींव रखूंगा।
तुम्हारी शान और शौकत की।
न कल कारखानों की....
न तुम्हारे विश्वविद्यालयों की।

नहीं निकलूंगा
भूख से विचलित होकर
याद रखूंगा .....
यह परायापन गाँठ बाँध कर।

शुक्रिया कोरोना
सभी भ्रम टूटे।
जाग गया मजदूर।
कुछ मुखौटे टूटे।

देनी होंगी सभी सुख सुविधाएं।
वरना मजदूर भी था कभी?
यह भूल जाएं।

अब न मजदूर होगा
न मजबूर होगा.....
बस वो सिर्फ मजबूत होगा।
हाँ .....मजबूत होगा।

विजेता सूरी रमण
मुंबई
editormahisandesh@gmail.com

कोरोना वॉरियर्स

वो तुम ही तो थे
जो कड़ी धूप में भूखे प्यासे
रात दिन
हमारी सुरक्षा में
हमारी सेवा में
अड़े खड़े रहे थे
वो तुम ही तो थे
जो अपने हाथों से
पूड़ियां बेल बेलकर
भूखे प्यासे लोगों के लिए
खाना बांट रहे थे।
वो तुम ही तो थे
कोरोना वॉरियर्स
जो हमारे घाव पर
खुशी का महलम लगा रहे थे
वो तुम ही तो थे
जो कभी पुलिस
तो कभी डॉक्टर, तो कभी नर्स
तो कभी पैरामेडिकल स्टाफ
तो कभी सफाईकर्मी बनकर
हमारी जान को बचाने के लिए
ईश्वर का रूप लेकर खड़े थे

वो तुम ही तो थे
कोरोना वॉरियर्स
जो हमारी टूटती सांसों को
साहस दे रहे थे।
वो तुम ही तो थे
जो हमारी टूटती हिम्मत को
बांधे खड़े थे
वो तुम ही तो थे
जिन्होंने हमारे भीतर
आशा और आत्मशक्ति को जगाए रखा
वो तुम ही तो थे
कोरोना वॉरियर्स
जिनके लिए पूरे देश में
तालियां और थालियां बजाई थी
वो तुम ही थे
जिनके सम्मान में सबके सिर झुके थे
तुम्हारे जज्बे को सलाम किया गया था
फूल बरसाए गए थे और जिनको
शत शत नमन किया गया था।

तारावती सैनी 'नीरज'
जयपुर (राजस्थान)
editormahisandesh@gmail.com

वयं राष्ट्रे जागृयाम

निश्चित ही ये किसी
पीर से कम नहीं
जो निःस्वार्थ हो हरते
जन मानस की पीर हैं

ये अनवरत निर्भय
हो कर के पोंछ रहे
विषमताओं में जो बह रहे
जन जन की आंखों के नीर हैं

कर्मयोगी हैं ये
कर्मयोद्धा भी हैं
देश हित में संलग्न ये ही
सच्चे कर्म वीर हैं

जो न्योछावर हैं
जन जन की सेवा में
अद्वितीय इनका धैर्य है
अद्भुत इनका धीर है

कर्तव्यनिष्ठ हैं ये
धर्म परायण भी हैं

ये जन कल्याण हेतु
अत्याधिक गंभीर हैं

अनंतकाल तक हम
ऋणी रहेंगे इन सब के
ये वो योद्धा हैं जिनके
हाथ में नहीं शमशीर है ..

लीना
अहमदाबाद (गुजरात)
editormahisandesh@gmail.com

'संकट की घड़ी में'

मंदिर काम न आया
मस्जिद काम न आया
संकट की इस घड़ी में
हॉस्पिटल ही काम आया
माता काम न आई
बाबा काम न आये
संकट की इस घड़ी में
डॉक्टर नर्स ही काम आए
दोस्त काम न आये
बंधु काम ना आए
संकट की घड़ी में
पुलिस वाले ही काम आए
बढ़ जाता और कोरोना
गंदा हो जाता शहर का कोना कोना
संकट की इस घड़ी में
सफाई वाले ही काम आये
हाथ मिलाना काम न आया
गले मिलना काम न आया
संकट की इस घड़ी में
हाथ जोड़ नमस्कार
करना ही काम आया

दिनेश चंद्र प्रसाद 'दीनेश'
कोलकत्ता
मो.9434758093

कार्टून : तरकश

ज़िंदगी हम फिर तेरा आगाज़ कर लेंगे...!

योगिता जीनत
जयपुर (राजस्थान)
editormahisandesh@gmail.com

है इरादा ये अटल,
वक्त हम देंगे बदल !
मुश्किलों का दौर है जो,
ये भी जाएगा निकल !
कह रही उम्मीद की लौ आस है,
जीत लेंगे जंग हम विश्वास है ।
हौसलों के पंख हैं परवाज़ कर लेंगे...!
ज़िंदगी हम फिर तेरा आगाज़ कर लेंगे...!

ख़्वाब आंखों में यूं ही पलते रहें
ज़िंदगी के दीप सब जलते रहें
इस यक़ीन के साथ चलना है हमें
मुश्किलों से अब निकलना है हमें
भूल बीते कल को ,बेहतर आज कर लेंगे...!
ज़िंदगी हम फिर तेरा आगाज़ कर लेंगे...!

राह मंजिल की कहीं ओझल न हो
मन कभी अवसाद से बोझिल न हो
झूम कर गाएगी फिर से ज़िंदगी
मुस्कराएगी लबों पर फिर खुशी
दर्द के सुर को खुशी का साज कर लेंगे...!
ज़िंदगी हम फिर तेरा आगाज़ कर लेंगे...!

देश की सेवा में जो इंसान हैं ये,
इस धरा पर मान लो भगवान हैं ये ।
धन्य है, सेवा, समर्पण, त्याग इनका,
देश की खातिर है ये अनुराग इनका ।
ऐसे वीरों पर सदा हम नाज़ कर लेंगे...!!
ज़िंदगी हम फिर तेरा आगाज़ कर लेंगे...!

वक्त रहते हम संभल जाएं तो बेहतर,
कुछ सबक लेकर बदल जाएं तो बेहतर।
तेज खोते सूर्य में फिर प्राण भर दें,
स्वावलंबी राष्ट्र का निर्माण कर दें।
अपने सुर को सृष्टि की आवाज़ कर लेंगे...!!
ज़िंदगी हम फिर तेरा आगाज़ कर लेंगे...!!

कुछ दिनों की हैं ये सब वीरानियां
रौनकें फिर लौट आएंगी यहां
जी उठेंगे दिलकशी सारे नज़ारे
फिर कहेंगे सब 'पधारो देश हारे'
फिर गुलाबी अपने हम अंदाज़ कर लेंगे...!
ज़िंदगी हम फिर तेरा आगाज़ कर लेंगे...!

मानवता को इन पर अभिमान

देवालय में पड़ गया ताला
बंद पड़ा अजान,
कैसा भयानक पल आया
व्याकुल हर इंसान।
छूने से ही मौत मिलेगी
सबको ये एहसास,
फिर भी कितने बनकर कर्ण
करते झोली भर भर दान,
मानवता को इन पर अभिमान।

छोड़ छाड़ मंदिर मस्जिद
रूग्णालय में आ पहुंचे भगवान,
खुदा ने खुद दामन थामा
सांसों में ना आए व्यवधान,
मानवता को इनपर अभिमान।

यम से दो दो हाथ कर रहे
आम जन को सांस दे रहे,
ये तो निकले देव धरा के
प्रथम करो इनका सम्मान,
मानवता को इन पर अभिमान।

कुमारी रौशनी
समस्तीपुर (बिहार)
raushanitk37@gmail.com

कोरोना कोविड-नाइंटीन

अब कोरोना को हराना है नष्ट करना है समूल ।
ग्रहण कर संकल्प संयम सावधानी का त्रिशूल ।।

सप्रेम अभिवादन करो नित युगल कर को जोड़ कर।
करो नमस्ते मुस्करा कर हाथ मिलाना छोड़कर।।

गले मिलने व झप्पी देने की आदतें कर दरकिनार ।
दिल मिला इज़हार कर अपनी मुहब्बत बेशुमार ।।

साबुन से धोएँ हाथ मल मल बीस सेकंड न्यूनतम ।
दूरी सामाजिक रख परस्पर डेढ़ मीटर कम से कम।

कातिल कोरोना को कुचल दो संगठन की शक्ति से
संक्रमण की चेन तोड़ो 'लॉक-डाउन' युक्ति से

कुंठित कोरोना की गति कर गर्म पेय पदार्थ पी।
मात्रा भोजन में बढ़ा कर शाक व फल फूल की।।

मुख मास्क धारण है सुरक्षा कवच किंचित मत डरो
स्पर्श चेहरे का उँगलियों से भूल कर भी मत करो

रूमाल टिश्यू या कोहनी रख खाँसिए या छींकिए
सार्वजनिक स्थल स्वच्छ रखें उन पर कदापि न थूकिए

रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाओ पौष्टिक आहार से।
आयुर्वेदिक जड़ी बूटी सेवन योग व सदाचार से ।

अनुपालन करो लॉक्डा उनका उच्चतम व्यवहार कर
घर की सीमा में हो सुरक्षित लक्ष्मण रेखा न पार कर

आओ दो दो हाथ कर लें कुटिल 'कोविड-नाइंटीन'
धूल चटा कर करें धुलाई खेल दाँव 'क्वारंटीन'

रोकें प्रसारण संक्रमण का निडर हो प्रतिबद्ध हो ।
करें कोरोना को पराजित सम्पूर्ण कार्य सिद्ध हो ।।

कौरव थे हारे महाभारत कुरुक्षेत्र के मैदान में ।
अब कोरोना भी हारेगा विश्वव्यापी अभियान में ।।

अदृश्य शत्रु है कोरोना हारेगा हर आयाम में ।
फहरायेंगे हम विजय पताका ऊँचे आसमान में ।।

भयावह कोरोना

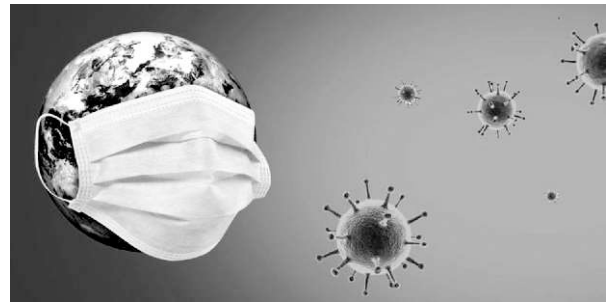

कुत्ते कहते हैं अति क्षुब्ध हैं हम
मानसिक तनाव से
अकेलेपन के अहसास से
ऊब चुके हैं करवटें बदल बदल कर हम
छटपटाते रहते हैं रात दिन
किन पर भौंकें अब हे भगवान
कोई बन्दा ही नज़र नहीं आता बाहर
सोचते हैं सर खुजा खुजा के हम
न जाने क्यों हैं आजकल
सब गलियाँ सुनसान?

फूल कहते हैं अति निराश हैं हम
ग्रस्त हैं हीन भावना से
क्या कोई भी नहीं अब ऐसा क़दरदान
करे जो मुक्तकंठ से
हमारी सुंदरता का बखान
कोई भी व्यक्ति नज़र आता नहीं अब
इन उपवनों में इन उद्यानों में
जो हमारी सुंदरता को सराहे
हमारे विभिन्न मनमोहक रंगों को निहारे
अपने मानस पटल पर उतारे
पूछते हैं वनदेवी से बार बार हम
न जाने क्यों हैं आजकल
सारे गुलशन बेइंसान?
पक्षीवृन्द कहते हैं अति उदास हैं हम
कोई भी आता नहीं इधर अब
भूलकर भी कभी हमारी ओर
सैर करने प्रातःकाल की सुखद भोर
कोई व्यक्ति नहीं आता इन कुंजों में
मुक्त करने अपना मानसिक तनाव
अवलोकन कर प्रकृति
का अद्भुत सौंदर्य
सुनकर हमारा मधुर कलरव गान
सुनकर हमारी कोकिला
की सुरीली तान
पूछते हैं प्रकृति से चहचहाकर हम
न जाने क्यों हैं आजकल
निर्जन वन हैरान?
कोरोना के जीवाणु
कहते हैं अचंभित हैं हम
जो व्यक्ति भगवान से भी नहीं डरते
पैसों के लिए क्या क्या
कुकर्म नहीं करते
कायरों की तरह आज डर कर
घुसे बैठे हैं छिपकर अपने घरों में
लॉकडाउन का अनुपालन कर
कोई बताए आज हम सूक्ष्म जीवाणुओं को
कि मिट्टी के यह घमंडी मानव शेर
जो समझते हैं स्वयं को
बड़ा तीसमार खाँ
न जाने क्यों हैं आजकल
इतने दुर्बल इंसान ?

चरनजीत लाल
मेटलर्जिकल इंजीनियर
Columbia, SC (USA)
editormahisandesh@gmail.com

कोरोना चुनौती है...

कर्मनिष्ठ भारत आने वाली पीढ़ी का स्वाभिमान बने

डॉ. राजेन्द्र मोहन भटनागर
हिरन मगरी, उदयपुर
editormahisandesh@gmail.com

कोरोना आत्मनिरीक्षण की ओर ले जाने के लिए चुनौती है। व्यक्ति स्तर से लेकर राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय स्तर तक अपने विकास, प्रबंधन वित्त, संतुलन, सामाजिक संप्रेषण, धार्मिक संयोजन, वैज्ञानिक संवरण, नीत प्रनीत, दिशा-विदिशा आदि में अपनाई गई मूल्यांकन प्रविधि की पारदर्शिता का जानने समझने की तटस्थ दृष्टि का यह समय है। क्या हम वास्तव में अग्रोन्मुख हुए हैं या पीछे हटे हैं। हमारे आगे पीछे गत-विगत से जमा किए जाते रहे वायरस-विकट संधियों से लगातार घिरे और क्यों उनके साथ अभ्यस्त होकर रह गए, क्यों उसे दुर्लभ मान लिया गया, यह वायरस हमारे सांच कर्म पर पुर्नविचार करने के लिए समय देना चाहता है। घर में पिता अपनी लडकी पुत्रवधू, भ्राता अपनी बहिन और बाहर तीन वर्ष की बच्ची तक को अपनी हवस का शिकार सरेआम बना रहा है, तब उसको यह वायरस क्या डराएगा, क्यों कि निर्भय होकर ऐसे निर्दयी आज भी इस पाप में रत हैं। सत्ता सरकार राजनीति के होने का सच क्या यही है, दुनिया जहां कोरोना को हराने के इंतजाम में अपने देश को इज्जत की नजर से देख रही है क्या उसकी आंखों को श्रमिकों की खस्ता हालत देखकर सुकून मिलेगा। इस समय मुझे अपनी पुस्तक गरीबी हटाओ का यह प्रसंग

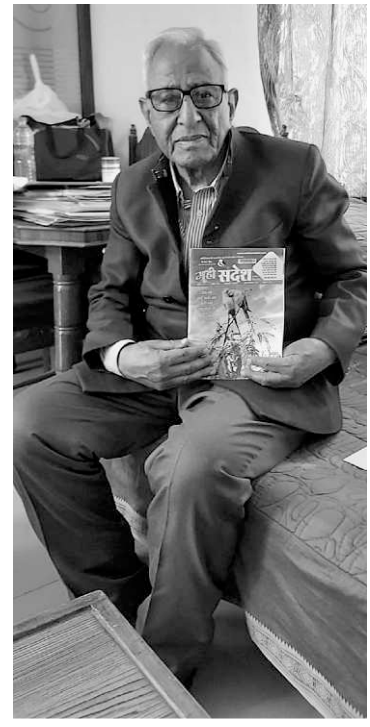

याद आ रहा है जब मैंने इस नारे की जनक तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी को उनके निवास पर यह पुस्तक उन्हें दी थी और दूसरे दिन तत्कालीन राष्ट्रपति वी.वी.गिरि को उनके निवास पर यह पुस्तक दी थी तब उन्होंने इस पुस्तक के पृष्ठ पलटते हुए पूछा था- संक्षिप्त में इसका सार। मैंने इस पुस्तक में दिए गए एक उद्धरण को पेश किया था, तब बारात कई दिनों तक जीमती थी, बाराती और घराती दोनों में हंसी मजाक चलते रहते थे, लड़के वाले उस समय घरातियों पर भारी पड़ रहे थे। तब घरातियों में से एक व्यक्ति ने खड़े होकर कहा सामने जो आला है क्या उसमें कोई रूमाल बिछा कर सो सकता है।

अब चौंकने की बारी लड़के वालों की थी सब मौन हो गए, तब उसने खड़े होकर कहा यह करिश्मा मैं दिखा सकता हूं, मेरे कहने पर दो मिनट अपनी आंखें आप सबको बंद रखनी होंगी, इस बीच किसी ने नादानी कर दी तो मेरी जान पर आ पड़ेगी, सबने आंखें बंद कर लीं और उसने जोर से कहा कि आंखें खोलकर देखो, आले में रूमाल बिछा था और वह जमीन पर लेटा हुआ था। सब आश्चर्य से उसको घूर रहे थे तब उसने कहा जो मैंने कहा था वह कर दिखाया, वी.वी.गिरि ने शांत भाव से मुझे देखा, उनका थुलथुल शरीर थोड़ा हिला डुला और मैं नमन करके चलने लगा तब वह बोले यही सच है।

तब से अबकी स्थिति बदली और हम क्वारंटीन लॉकडाउन कर्फ्यू के रहते हुए अपने आपको अंधेरी गुफा में अनुभव करने लगे। दिन-रात मौत होने लगी, समाज और सरकार दोनों ही इस जीवन-मरण के संकट से घबरा उठे, बाजार बंद, धंधे बंद और अर्थ की संभावनाओं को भी विराम, तब क्या करें, कैसे एकांत अंधेरे में रहें, सोशल डिस्टेंसिंग,

मास्क पहनना आदि मनुष्य के मन में घबराहट पैदा कर रहा था और ऐसी विषम परिस्थिति में भी जो सहायता प्राप्त की गई थी, बिचौलिया उसका पूरा लाभ उठा रहे थे। काश ऐसे कर्मचारी अधिकारियों के प्रति सख्त से सख्त कदम उठाया जाता तो भ्रष्टाचार, अनुशासनहीनता, यौन दुष्कर्म आदि सामने नहीं आते।

यदि इसमें आपातकाल लगा दिया जाता तो वासी-प्रवासी नहीं बनते और इधर से उधर नहीं भटकते। सब जहां थे वहीं रहते, इस आदेश को मानना अनिवार्य हो जाता, तो जो सुविधाएं सरकार उनको दे रही थी उसी सहायता से उन लोगों को वहां रखा जा सकता था। आपदाओं का ओर छोर नहीं रहा, भूकंप और तूफान भी इसी समय आते रहे। अस्थमा वालों ने अनुभव किया वो पहले से बेहतर हैं, नदियों और झीलों के तले दिखाई देने लगे, गंगा साफ-सुथरी बहने लगी, प्रदूषण खत्म होता लगने लगा तब एकांतवासियों ने अनुभव किया कि प्रकृति को उखाड़ फेंकने का यह परिणाम है। काश इस संकेत से कुछ समझ सोच कर निर्णय लिया जाए तो पेट्रोल डीजल की आंधी बंद करनी पड़ेगी, वातावरण को सर्वाधिक दूषित करने वाली हवाई सेवाओं पर अंकुश लगाना होगा। ऐसी विषम स्थिति में चीन का विकट प्रश्न फिर सामने आ खडा हुआ। चीन से प्रथम युद्ध हुए छह दशक पूरे हो रहे हैं और आज तक हम यह तय नहीं कर पाए कि चीन हमारा मित्र है या शत्रु बल्कि उससे लगातार अपरिपक्व संधि करते रहे, और हर बार वह भारत की सीमाओं का अतिक्रमण करने से बाज नहीं आया। चीन ने सड़कें बनवा लीं, कैंप बना लिए तब भी हमने उसको रोका नहीं। यदि उसे उसी समय रोक दिया जाता और उससे दूरी बनाई रखी जाती तो आज यही स्थिति नहीं होती कि हमारे यहां करोड़ों व्यक्ति रोजगार की तलाश कर रहे हैं और हम चीन के व्यापार को अपने यहां स्थापित करते रहे, अर्थात यहां के बाजार से इकठ्ठा पैसा चीन को भिजवाते रहे। इस विषय पर सोचने के लिए किसी पार्टी को समय नहीं मिला। आज भी भारतीय बाजार चीनी सामान से अटा हुआ है और भारतीयों की आदत भी चीन के सस्ते सामान की पड़ गई है। अगर इस दिशा में हमारे व्यापारी, संसद विधानसभा स्वावलंबी भारत बनाने का प्रयत्न करते और चीन के बाजार को हमारे यहां प्रवेश नहीं करने देते तो आज बेकारी का भूकंप हमारे नवयुवकों के मानस को विचलित नहीं करता। आज भी हम चुनाव की बाड़ेबंदी में दिन रात लगे हुए हैं, जबकि हमसे बजरी की बाड़ेबंदी नहीं हो सकी और इसे रोकने वालों के ऊपर सरेआम बुल्डोजर चला दिए गए।

मेरी प्रार्थना है कि चरित्र दृढ़ संकल्प से बनता है उसी पर निर्मित स्वाभिमान किसी दूसरे की हिम्मत सामने नहीं आने देता कि वही अपमान कर सके। प्राणों का भारत बनाओ, अपनी समस्याओं को हल करो और हम प्रण करें भारत में बेकारी का भूकंप न आ पाए एवं न ही किसी शत्रु की हम पर आंख उठाने की हिम्मत हो। कर्मनिष्ठ भारत आने वाली पीढ़ी का स्वाभिमान बने ऐसे चरित्र की स्थापना हो। इन परिस्थितियों में समूचा देश एक जुट रहना चाहिए और सबकी यही मंशा है कि चीन को इस बार अपनी शक्ति का ऐसा अनुभव करा दिया जाए कि भविष्य में इस प्रकार के वो छिछले अमानवीय आचरण का उदाहरण पेश न कर सके।

नमन

स्व. प्रदीप बेदी "काकुल"

26.10.91-24.6.2000

कहां से लाएं तुम्हे ढूंढ के
हर ख़्वाहिश पूरी करने को
पूरा जीवन गुज़र जाएगा
जख्म हमारा भरने को
कलम चाहे मेरी है,
पर दर्द मेरे बच्चे के दिल का है।।

माँ ओ माँ, माँ ओ माँ
तेरा अक्स खड़ा सिरहाने माँ,
तू क्यों उसको पहचाने ना।
साँस थमी थी तू ना आई,
क्या था दिल में तू जाने ना।

आँखे ढूंढ रही थी तुझको,
बातें थी कहनी थी तुझको।
वक्त नहीं था क्या बतलाता,
आँचल का छीनना तू जाने ना।

आंसू तेरे पोंछना चाहूँ,
देखूं तुझे पर दिख ना पाऊँ।
कैसी ये मजबूरी माँ,
मैं मानूँ ना तू जाने ना।

खामोश लबों का लफ्ज़ बन जाऊँ,
नयन तेरे से दर्द मिटाऊं।
सीने से लगा लो माँ,
ये जन्नत है तू जाने ना।

गम है तोड़ दी क़समें वादे,
कंधों पर पिता के भार मैं डाले।
भुला रिश्तों को कैसे पहुंचा,
उस जहाँ अकेला तू जाने ना।

रजनी श्री बेदी

'वो भूली दास्तां, लो फिर याद आ गयी'

अनीता गुहा

शिशिर कृष्ण शर्मा
फ़िल्म इतिहासकार
9821394486
editormahisandesh@gmail.com

मुंबई के उपनगर बान्द्रा (पश्चिम) का मशहूर लिंकिंग रोड। इसी लिंकिंग रोड पर नेशनल कॉलेज के ठीक बगल में स्थित है 'मीराबैल बिल्डिंग', जिसकी दूसरी मंज़िल पर मौजूद विशाल फ़्लैट में गुज़रे ज़माने की मशहूर अभिनेत्री अनीता गुहा रहती थीं। फरवरी 2004 के तीसरे हफ़्ते में इसी फ़्लैट में अनीता जी से मेरी मुलाक़ात हुई थी। सिनेमा को वो कई दशकों पहले अलविदा कह चुकी थीं और पति के निधन के बाद से, पिछले क़रीब 15 सालों से वो अकेली रह रही थीं। इंटरव्यू के लिए उन्हें मनाने में थोड़ा समय ज़रूर लगा क्योंकि तस्वीर खिंचाने के लिए वो तैयार नहीं थीं। शुरूआत में उन्होंने थोड़ी-बहुत नानुकुर की लेकिन फिर इंटरव्यू के लिए तो हामी भर ही दी। और जब बातों का सिलसिला शुरू हुआ तो तस्वीर खिंचाने की उनकी झिझक भी ग़ायब हो गयी।

अनीता जी के पिता वन अधिकारी थे और नौकरी के सिलसिले में उनका ज़्यादातर समय पूर्वोत्तर के राज्यों में गुज़रा था। अनीता जी के मुताबिक़ उनका जन्म 17 जनवरी 1939 को बर्मा की सीमा से लगे जंगलों में हुआ था और उनका बचपन भी पूर्वोत्तर के जंगलों, दार्जिलिंग और सुंदरवन में गुज़रा था। एक भाई और दो बहनों में वो सबसे छोटी थीं। बंटवारे के बाद उनका परिवार कोलकाता आकर बस गया था जहां अनीता जी ने अपनी स्कूली पढ़ाई पूरी की।

अनीता जी ने बताया था, 1950 के दशक के शुरू में मैंने 'मिस कोलकाता' का ताज हासिल किया। साल 1952 में मुंबई के 'कारदार स्टूडियो' और हॉलिवुड के 'ली कैमरिन' ने मिलकर 'कारदार-कॉलिनोज़ टेलेंट कॉम्पिटिशन' आयोजित किया, जिसमें हिस्सा लेने के लिए मैं मुंबई चली आयी। इस प्रतियोगिता के सभी राऊण्ड्स में मैंने पहला

स्थान हासिल किया। लेकिन सबसे बड़ी अड़चन ये थी कि मुझे हिंदी नहीं आती थी। 'कारदार स्टूडियो' ने मेरे साथ 300 रूपए प्रतिमाह के वेतन पर 2 साल का कांट्रेक्ट किया लेकिन उनकी शर्त थी कि मुझे 6 महिने में हिंदी सीखनी होगी। इस प्रतियोगिता में मेरे साथ चांद उस्मानी का भी चुनाव हुआ था और कांट्रेक्ट की शर्तें मंज़ूर करके मैं वापस कोलकाता लौट गयी थी।

(अभिनेत्री पीस कंवल का कहना है कि इस प्रतियोगिता में पहला स्थान उन्होंने हासिल किया था। चूंकि अब उस दौर के और उस प्रतियोगिता से जुड़े अन्य लोग हमारे बीच नहीं हैं, इसलिए किसका दावा सही है, इस बात की पुष्टि कर पाना हमारे लिए मुमक़िन नहीं है। लेकिन इतना तय है कि पीस कंवल, अनीता गुहा और चांद उस्मानी, इन तीनों ही अभिनेत्रियों ने 'कारदार-कॉलिनोज़ टेलेंट कॉम्पिटिशन' के ज़रिए हिंदी सिनेमा में क़दम रखा था।)

अनीता जी के मुताबिक़, बांग्ला फ़िल्म उद्योग में जब ये बात फैली कि मैं मुंबई से 'कारदार-कॉलिनोज़ टेलेंट कॉम्पिटिशन' जीतकर लौटी हूं तो बांग्ला फ़िल्मों के निर्माताओं में मुझे साईन करने की होड़ लग गयी। तब तक मेरे पिता का निधन हो चुका था और मां मुझे मुंबई भेजने को तैयार नहीं थीं। मजबूरी में मुझे 'कारदार स्टूडियो' के साथ हुआ अनुबंध रद्द कराना पड़ा। साल 1953 में मेरी पहली बांग्ला फ़िल्म 'बंशेर किला÷ रिलीज़ हुई जिसमें मेरे हीरो अनूप कुमार थे, लेकिन मेरा मन तो मुंबई आने के लिए छटपटा रहा था

उन्हीं दिनों अभिनेता ओमप्रकाश अपनी किसी फ़िल्म की रिलीज़ पर कोलकाता पहुंचे। अनीता जी के मुताबिक वो फ़िल्म 'लहरें' या 'झांझर' में से एक थी जिसका निर्माण भी ओमप्रकाश ने ही किया था। अनीता जी ओमप्रकाश से मिलीं तो उन्होंने अनीता जी को फ़िल्म 'दुनिया गोल है' के लिए साईन करके मुंबई बुला लिया। साल 1955

में रिलीज़ हुई फ़िल्म 'दुनिया गोल है' से अनीता गुहा ने हिंदी फ़िल्मों में कदम रखा था। इस फ़िल्म में उनके हीरो करण दीवान थे। अनीता जी की उम्र उस समय महज़ 16 साल थी।

6 'लहरें', 'झांझर' (दोनों 1953) और 'दुनिया गोल है' (1955) का निर्माण 'न्यू सई प्रोडक्शंस' के बैनर में संगीतकार सी.रामचन्द्र ने किया था। अभिनेता ओमप्रकाश और सी.रामचन्द्र क़रीबी दोस्त थे और ओमप्रकाश इस बैनर में उनके पार्टनर और इन फ़िल्मों के सह-निर्माता भी थे। फ़िल्म 'दुनिया गोल है' का निर्देशन भी ओमप्रकाश ने ही किया था।8

ओमप्रकाश ने मुंबई में पैर जमाने में अनीता जी की बहुत मदद की। साल 1955 में ही फ़िल्म 'तांगावाली' रिलीज़ हुई जिसमें अनीता जी के सहकलाकार शम्मी कपूर, निरूपा राय और बलराज साहनी थे। अनीता जी के मुताबिक, एक तो मैं मुंबई जैसे बिल्कुल अनजान शहर में थी, उस पर मुझे फ़िल्मी तौर-तरीक़ों का भी कोई ज्ञान नहीं था। और फिर उम्र से भी मैं ज़्यादा परिपक्व नहीं थी, इसलिए करियर को लेकर कभी कोई योजना ही नहीं बना पायी। जैसा भी काम मिलता रहा, करती चली गयी। फ़िल्म 'छूमंतर' में मैं सहनायिका थी तो 'आंख का नशा', 'लाल-ए-यमन' और 'यहूदी की बेटी' जैसी बी ग्रेड फ़िल्में बतौर नायिका कीं। ये सभी फ़िल्में साल 1956 में बनीं थीं।

शुरूआत में ही इस किस्म की भूमिकाओं ने अनीता जी के करियर पर बुरा असर डाला। 'एक झलक', 'देख कबीरा रोया', 'शारदा', 'उस्ताद' (सभी 1957) जैसी फ़िल्में उन्होंने बतौर सहनायिका कीं तो 'भला आदमी', 'कल क्या होगा', 'माया बाज़ार' और 'टैक्सी स्टैंड' (सभी 1958) जैसी बी ग्रेड फ़िल्मों में वो मुख्य भूमिका में नज़र आयीं। अनीता जी के मुताबिक़, बतौर नायिका, मुख्यधारा की ए ग्रेड फ़िल्में न मिल पाने का मुझे बेहद दुख था लेकिन हालात मेरे बस में नहीं थे। ओमप्रकाश जी ने ज़रूर मेरे करियर को सहारा देने की कोशिश की। अपने निजी बैनर 'लाईट एंड शेड' में उन्होंने फ़िल्म 'चाचा ज़िंदाबाद' (1959) और 'संजोग' (1961) बनाई तो उनमें मुख्य भूमिका मुझे दी। लेकिन तब तक मुझे पौराणिक फ़िल्मों की नायिका के तौर पर पहचाना जाने लगा था।

दरअसल पौराणिक फ़िल्मों के लिए मशहूर कंपनी 'बसंत पिक्चर्स' के मालिक और निर्माता-निर्देशक होमी वाडिया ने अनीता जी को फ़िल्म 'पवनपुत्र हनुमान' (1957) में सीता की भूमिका ऑफ़र की थी। मन में

पौराणिक फ़िल्मों का ठप्पा लग जाने की हिचकिचाहट होने के बावजूद अनीता जी को हामी भरनी पड़ी। इस फ़िल्म की ज़बर्दस्त कामयाबी के बाद उन्हें लगातार पौराणिक फ़िल्में मिलने लगीं। फ़िल्म सम्पूर्ण रामायण (1961), 'श्री राम भरत मिलाप' और 'शंकर सीता अनुसूया' (दोनों 1965) में भी वो सीता की भूमिका में नज़र आयीं। इसके अलावा उन्होंने बतौर नायिका 'सम्राट पृथ्वीराज चौहान', 'टीपू सुल्तान' (दोनों 1959), 'संगीत सम्राट तानसेन' (1962), 'महारानी पद्मिनी' (1964) और 'संत तुकाराम' (1965) जैसी ऐतिहासिक फ़िल्में भी कीं।

साल 1961 में अनीता जी का विवाह हुआ। उनके पति माणिक दत्त अभिनेता थे जिन्होंने 'संबंध', 'अधिकार', 'अमानुष', 'दो अनजाने', 'आनंद आश्रम', 'गृह प्रवेश', 'बरसात की एक रात' और 'दुश्मन देवता' जैसी क़रीब 30 फ़िल्मों में चरित्र भूमिकाएं की थीं। अनीता जी के मुताबिक, '1965 से 1968 के दौरान क़रीब 4 सालों तक मैं फ़िल्मों से दूर रही। मेरे करियर का दूसरा दौर शक्ति सामंत की फ़िल्म 'आराधना' (1969) से बतौर चरित्र अभिनेत्री शुरू हुआ। उस दौर में मैंने 'संबंध' (1969), 'शर्मीली' (1971), 'अनुराग' (1972), 'झूम उठा आकाश' (1973), 'नागिन' (1976), 'आनंद आश्रम' (1977), 'तुम्हारे लिए' (1978), 'फ़िफ़्टी-फ़िफ़्टी' (1981) और 'कृष्णा - कृष्णा' (1986) जैसी कई फ़िल्में कीं। साल 1975 में बनी फ़िल्म 'जय संतोषी मां' में मैंने संतोषी माता की भूमिका की थी और ये फ़िल्म हिंदी सिनेमा के इतिहास की सबसे कामयाब फ़िल्मों में से है।

अनीता जी का कहना था, 'मेरे पति की मृत्यु के बाद से माला सिन्हा, स्मृति बिस्वास और बेलाबोस जैसी क़रीबी सहेलियों और मेरी बड़ी बहन की बेटी अभिनेत्री प्रेमा नारायण ने कभी भी मुझे अकेलेपन का एहसास नहीं होने दिया। इन सभी ने हर क़दम पर मेरा साथ दिया'।

फ़िल्म 'शारदा' और 'गूंज उठी शहनाई' की भूमिकाओं के लिए अनीता जी का नामांकन 'फ़िल्मफ़ेयर पुरस्कार' के लिए हुआ था लेकिन दोनों ही बार ये पुरस्कार उनके हाथ नहीं आ पाया। क़रीब 40 सालों के करियर के दौरान उन्होंने हिंदी के अलावा बांग्ला, राजस्थानी और भोजपुरी जैसी भाषाओं समेत 100 से ज़्यादा फ़िल्मों में अभिनय किया। साल 1991 में हिंदी में बनी 'लखपति' उनकी आख़िरी प्रदर्शित फ़िल्म थी।

अनीता गुहा का निधन 68 साल की उम्र में 20 जून 2007 को मुंबई में हुआ।

अपनी लाख की कलाकृतियों से हमेशा जीवित रहेंगे हाजी इकराम अहमद खान

रोहित कृष्ण नंदन

लाख की कला को जिनका जीवन समर्पित रहा आज वही कलाकार हाजी इकराम अहमद खान हमारे बीच नहीं हैं 11 मई 2020 को उनका इंतकाल हो गया, लेकिन अपने हाथों से लाख की बनाई गई अनमोल कलाकृतियों के बीच आज भी हाजी इकराम अहमद खान हमारे बीच जीवित हैं और हमेशा रहेंगे, विभिन्न राजनीतिक हस्तियां सोनिया गांधी, मुरली मनोहर जोशी, वसुंधरा राजे सिंधिया, स्वर्गीय राजीव गांधी आदि इनकी लाख कला की मुरीद रही हैं। प्रिंस चार्ल्स, क्वीन एलिजाबेथ, चॉर्ली केप्लिन के लिए लाख से बनी कलाकृतियों का निर्माण किया। माही संदेश पत्रिका के प्रधान संपादक रोहित कृष्ण नंदन से बात करते हुए हाजी इकराम खान के पुत्र शादाब अहमद ने बताया कि आने वाली 15 अगस्त को पिता हाजी इकराम जी को भारत पब्लिकेशन की ओर से लाइफ टाइम गोल्डन अचीवमेंट अवॉर्ड मिलने जा रहा है, मगर अफसोस आज वह हमारे बीच नहीं हैं। पिता की तीन बातें मुझे हमेशा याद रहती हैं वह मेरे लिए मेरे पिता के साथ साथ इस लाख कला को सिखाने वाले गुरु भी थे।

पहली बात

पिता हाजी इकराम अहमद खान कहा करते थे कि अपने आंसू दूसरों को मत पोंछने दो क्योंकि दूसरे पौंछेंगे और सौदा करेंगे।

दूसरी बात

अपनी मेहनत से जो कमाया उसे ही घर के अंदर खर्च करना।

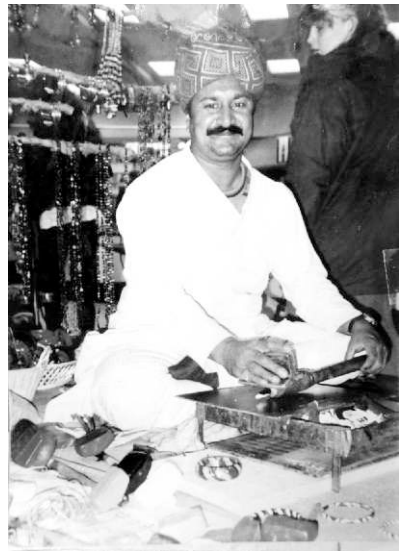

तीसरी बात

हमेशा इस लाख कला को आगे बढ़ाते रहना। शादाब ने बताया कि पिता ने मुझे महाभारत काल की पांच हजार वर्ष पुरानी लाख कला का ज्ञान दिया जो कि मेरे लिए बेशकीमती है।

पद्श्री पुरस्कार के काबिल

पुत्र शादाब अहमद ने बताया कि वर्ष 2016 में पहली बार पद्मश्री पुरस्कार के लिए आवेदन किया लगातार वर्ष 2019 तक अब तक चार बार आवेदन करने के बाद भी उनकी कला को पुरस्कार नहीं मिल पाया जबकि वह इस पुरस्कार के हकदार थे, इस पुरस्कार के लिए कई बार जयपुर कलेक्टर ने भी अनुशंसा की है, लेकिन मैं उन्हें मरणोपरांत पद्मश्री पुस्कार दिलवाने के लिए इस मुहिम में जुटा हुआ हूं और जुटा रहूंगा क्योंकि मेरे वालिद इस पुरस्कार के लायक थे।

प्रधानमंत्री से भी मुलाकात रही अधूरी

शादाब बताते हैं कि नोटबंदी के बाद वर्ष 2015 में वालिद हाजी इकराम जी ने प्रधानमंत्री को भेंट करने के लिए एक अपनी लाख की कला से डेकोरेशन प्लेट का निर्माण किया जिसमें उन्होंने प्लेट के अंदर ताज को उकेरा है, कई बार प्रधानमंत्री से मिलने की कोशिश की लेकिन यह कोशिश उनके रहते हुए मूर्त रूप नहीं ले पाई,उम्मीद करता हूं कि उनकी यह इच्छा भी मैं पूरी कर सकूं और उनकी यह कलाकृति मैं प्रधानमंत्री महोदय को भेंट कर सकूं।

फिल्मों में भी दिखी हैं इनकी कलाकृतियां

शादाब बताते हैं कि वालिद ने अक्षय कुमार, सोनम कपूर आदि के लिए भी लाख से बनी कलाकृतियों का निर्माण किया है। अपने प्रारंभिक दिनों में इन्होंने हरे रामा हरे कृष्णा फिल्म के लिए दिल्ली के अशोका होटल में 200 चिलम भी बनाई, इसके अलावा मशहूर फिल्म मुगले आजम में उपयोग की गई आधी 'वैलरी इन्होंने ही डिजाइन की थी। पिता से मिले हुनर को आगे बढ़ाने में जुटे हैं शादाब

बेटे शादाब अहमद (मास्टर क्राफ्टमैन) भी अपने पिता की कला को आगे बढ़ाने में जुटे हुए हैं, शादाब को दस्तकार आर्ट समिति दिल्ली की ओर से बेस्ट इनोवेशन का पुरस्कार तथा प्रसिद्ध फैशन डिजाइनर रितु बेरी की ओर से बेस्ट परफॉमेंस का अवॉर्ड व एमएसएमई व एनईजैडसीसी की तरफ से स मानित किया जा चुका है श्रीलंका, बेल्जियम, नेपाल, अफगानिस्तान आदि

देशों से भी कलाप्रेमी इनके पास लाख की कला को सीखने के लिए निरंतर आते रहते हैं।

भारत सरकार और राजस्थान सरकार के तत्वावधान में आयोजित कई कार्यक्रमों में कला के प्रोत्साहन के लिए हाजी इकराम अहमद खान ने 21 देशों की यात्राएं की हैं साथ ही विभिन्न प्रकार के राष्ट्रीय व अंतराष्ट्रीय सहति कुल 27 अधिक पुरस्कार प्राप्त किए हैं। वर्ष 2009 में इन्हें अमिताभ ब'चन व सचिन तैंदुलकर के साथ बेस्ट सिटीजन ऑफ इंडिया का पुरस्कार प्रदान किया गया था। लाख की कला के प्रति इनका समर्पण व ज्ञान अद्भुत है। माही संदेश पत्रिका परिवार हाजी इकराम अहमद खान को शत शत नमन करता है हमें उम्मीद है कि भारत सरकार इन्हें लाख कला के लिए मरणोपरांत पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित करेगी।

अपनी बेगम नाजिमा के साथ इकाराम खान

शत् शत् नमन

लाख कला को दुनिया में मशहूर करने वाले
हमारे वालिद **हाजी इकराम अहमद खान**
अब इस दुनिया को रुखसत कर गए,
इनका आकस्मिक निधन
11-05-2020 को हो गया।
अल्लाह इन्हें जन्नत में आला से
आला मुकाम अता फरमाए....

शादाब अहमद (पुत्र) मास्टर क्राफ्ट्समैन
(मो. 7014010662)
एवं समस्त शोकाकुल परिवार जन
86/3821 भोप जी का डेरा, खेतड़ी हाउस,
आउटसाइड चांदपोल, जयपुर

डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी/450/2018-20
समाचार पत्र की पंजीयन संख्या : RAJHIN/2018/75539

प्रकाशन की तिथि : माह की 1 तारीख
प्रेषण दिनांक : हर माह की 5 तारीख, सी.एस.ओ. गांधीनगर, जयपुर

कोटि-कोटि नमन

स्वर्गीय. डॉ. मदन लाल शर्मा जी

(03-01-1932 - 06-03-2020)

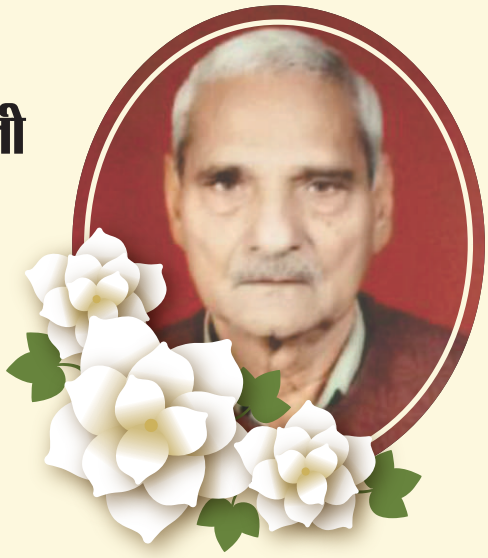

हम सभी के पथ प्रदर्शक, हिन्दी साहित्य जगत के वरिष्ठ साहित्यकार, शिक्षाविद एवं माही संदेश के संस्थापक स्वर्गीय. डॉ. मदन लाल शर्मा जी को माही संदेश परिवार सादर श्रद्धा सुमन अर्पित करता है।

देश के लिए निभाएंगे ये टास्क
बाहर निकलेंगे तो पहनेंगे मास्क

आप सुरक्षित हैं तो आपका परिवार,
समाज और ये देश सुरक्षित है
मास्क पहनें, बार-बार हाथ धोएं,
उचित दूरी बनाकर मिलें...

माही संदेश और रघु सिन्हा माला माथुर चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा जनहित में प्रसारित...

RAGHU SINHA MALA MATHUR CHARITY TRUST

माही संदेश
दशक दिल तक

पत्रिका अवितरित होने की स्थिति में इस पते पर भेजें
प्रेषक :

संपादक (माही संदेश)
50-51 ए, कनक विहार, कमला नेहरू नगर
के पास, अजमेर रोड़, हीरापुरा, जयपुर 302021
(राजस्थान) । मो. 9887409303

सेवा में,

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक रोहित कृष्ण नन्दन द्वारा कांति ऑफसेट प्रिन्टर्स, 448, बाक्लीवाल भवन, लाल जी सांड का रास्ता, जयपुर से छपवाकर माही संदेश, 50-51 ए, कनक विहार, कमला नेहरू नगर, अजमेर रोड़, जयपुर - 302021 से प्रकाशित किया। मो. 9887409303